बोल्शेविक जादूगर

अर्थात्

(लेनिनकी जीवनी और उसके विचार)

लेखक

रमाशङ्कर अवस्थी,

सम्पादक दैनिक "वर्त्तमान।"

प्रकाशक

भारत पुस्तक भण्डार

३८, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

प्रथम संस्करण } १९२१ { मूल्य ॥)

—प्रकाशक—
महादेव प्रसाद झुंझुनूवाला,
भारत पुस्तक भण्डार,
३१ बड़तल्ला ष्ट्रीट, कलकत्ता।

प्रिण्टर—श्रीहृषीकेश घोष,
रुद्रप्रिण्टिङ्ग वर्क्स,
७न० गौरमोहन मुखर्जीर ष्ट्रीट,
कलकत्ता।

वक्तव्य ।

—※—

लेनिन संसारके लिये पहेली है। उसे खून पीनेकी हरदम प्यास रहती है। वह खूनका प्यासा है। वह बहुत खून पी चुका है, पीता रहता है। पर उसकी प्यास नही बुझती। उसका पञ्जा हर वक्त खूनसे लथपथ रहता है। वह बड़ा खूनी है, मगर तो भी लोग उसे बड़ा दयावान्, बड़ा ममता-वान् और सीधा, सादा, सरल और मधुर बतलाते है! मि० नेलस उसे दयालु, मिसेज स्नोडेन उसे सहृदय और मिस पेंकहर्स्ट उसे देवता मानती हैं। यह क्या बात है? दुनिया भर लेनिनसे डरती है। युरोपवाले उसका नाम सुनकर कांप जाते हैं। अंगरेज़ लोग उसकी बात आनेपर ओंठ चबाते हैं।

लेनिन इतना विचित्र क्यों है? जो लोग उससे मिलने जाते हैं, वे उसे, प्यार करने लगते हैं। इस लेनिनमें ऐसा कौनसा जादू है? दुनिया भर उसे जानती है, मानती है। क्या दुनियां उसकी खूनी स्कीमसे सहानुभूति रखती है? क्या दुनिया भी खूनकी प्यासी है? दोनों बातोंमेंसे किसी भी बातका स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। क्या बात है?

लेनिन रूसका बादशाह है? यह बात भी नहीं। लेनिन दुनियाकी सहानुभूति जीत रहा है? इसमें अचम्भा कुछ भी नहीं। हाँ, वह एक जबर्दस्त आदमी है। विकट वक्ता और

है कि, संसार भरके लक्ष्मीपति लूटकर मज़दूर या किसान बना दिये जायं। लूटा हुआ धन सर्वसाधारणके काममें लाया जाय। अमीरोंके बड़े-बड़े महल छीने जाकर मजदूरोंको रहनेके लिये दे दिये जायँ, उनकी मोटरें छीनकर किसानोंको खेतोंतक पहुँचाया करें। जो परिश्रम न करे, उसका शासनमें को प्रतिनिधित्व न रहे। और ऐसा कोई भी मनुष्य न बचे, जो, विना परिश्रमकी रोटी खा सके।

लेनिनकी ये मोटी-मोटी बातें हैं। उसकी इन बातोंसे संसारकी वहुत बड़ी हितैषिता प्रकट होती है, पर उसकी बातें जितनी अच्छी हैं, उद्देश जितने भले हैं, उसकी हितैषिता जितनी पवित्र है, उतनी ही भयङ्कर उसकी कार्यप्रणाली है। वह दयावान् हत्यारा है। वह सहृदय जल्लाद है। वह साम्यवादी ख़ूनी है। वह निष्ठुर स्नेही है। उसके काम ऐसे ही हैं, उसके ढङ्ग ऐसे ही हैं।

लेखक।
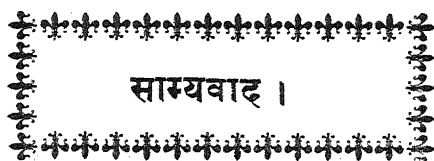
साम्यवाद ।

(१)

समदर्शीने सकल मनुज सम उपजाये थे,
प्रकृति-दत्त अधिकार सभीने सम पाये थे ।
अमृत पुत्र सम सभी जगत् वनमें आये थे,
सबने मेवे मधुर मुक्तिके सम खाये थे ॥
जीवन उपवनके लिए जल समान दर्कार था ।
पृथ्वी, पानी, पवनपर सबका सम अधिकार था ॥
भेड़ एक हो और दूसरा शेर, नहीं था ;
एक बाज़ हो और अनेक बटेर, नहीं था ।
एक ज़बर हो और दूसरा ज़ेर, नहीं था ;
आये दिन यह मचा हुआ अन्धेर नहीं था ॥
सबको सम संसारमें सब सुख, सकल सुपास थे ।
प्रभु उनमें कुछ थे नहीं और नहीं कुछ दास थे ॥
पर मनुजोंकी प्रकृति रङ्ग कुछ ऐसे लाई ;
समय समयपर घोर क्रान्ति जगमें करवाई ।
सबल पड़े बलवान्, मौत निर्बलकी आई ;
बना सुदामा एक, एक धनपतिका भाई ॥
घोर नारकी एक तो एक स्वर्गका दूत था ।
एक पुण्य-मय पूत अति पापी एक अछूत था ॥

कुछ भूखों मर रहे महा तनु शीर्ण हुआ है ;
कुछ इतना खा गये कि, घोर अजीर्ण हुआ है।
कैसा यह वैषम्य भाव अवतीर्ण हुआ है ;
जीर्ण हुआ मस्तिष्क हृदय सङ्कीर्ण हुआ है ॥
कुछ मधु पीकर मत्त हों, आँसू पीकर कुछ रहें ।
कुछ लूटें संसार-सुख, मरते जीकर कुछ रहें ॥

कुछ तो मोहन-भोग बैठकर हों खानेको ;
कुछ सोयें अधपेट तरस दाने दानेको ।
कुछ तो लें अवतार स्वर्गके सुख पानेको ;
कुछ आयें बस नरक भोग कर मर जानेको ॥
कुछ आनन्द तरङ्गमें मग्न सदा रहकर रहें ।
कुछ जीवन भर क्लेशमें हाय भाग्य ! कहकर रहें ॥

प्रलय धार सी बड़ी विषमता विष सी धाई ;
तहमें सोये बहुत नाव कुछहीने पाई ।
दूर जा पड़े बहुत छूट कर भाई भाई ;
डूबा सकल समाज बाढ़ कुछ ऐसी आई ॥
स्वर्ग नरक दोनों विषम बने साम्य-संसारमें ।
कोई महलोंमें रहा—कोई कारागारमें ॥

पड़े पड़े ही लोग लगे कुछ मौज उड़ाने ;
कुछ श्रमसे भी पा न सके मुट्ठीभर दाने ।
मिटी सुहृदता लगे मनुजसे मनुज घिनाने ;
एक रूप वह कहाँ, बन गये नाना बाने ॥

पड़ते पाँसे इस तरह बने उच्च कुछ हीन हैं ।
पौबारा कुछके सदा कुछके काने तीन हैं ॥
श्रम किसका है मगर मौज हैं कौन उड़ाते ;
है खानेको कौन, कौन उपजा कर लाते ।
किसका बहता रुधिर पेट हैं कौन बढ़ाते ;
किसकी सेवा और कौन हैं मेवा खाते ॥
क्यासे क्या यह देखिये रङ्ग हुआ संसारका ।
युगविकास या ह्रासका संसृति या संहारका ॥
यह दारुण वैषम्य कालकी यह निठुराई ;
रावणकी दुष्टता कंसकी सी कुटिलाई ।
मारे कितने मनुज मौत इसने बे-आई ;
नहीं सूझने दिया हाय भाईको भाई ॥
परम पीड़िता, विह्वला पृथ्वी लगी पुकारने ।
हिला दिया हरिका हृदय भीषण हाहाकारने ॥
समदर्शी फिर साम्य रूप धर जगमें आया ;
समताका सन्देश गया घर घर पहुँचाया ।
धनद रङ्कका ऊँच नीचका भेद मिटाया ;
विचलित हो वैषम्य बहुत रोया चिल्लाया ॥
काँटे बोये राह में, फूल वही बनते गये ।
साम्यवाद के स्नेहमें सुजन सुधी सनते गये ॥
ठहरा यह सिद्धान्त स्वत्व सबके सम हों फिर ;
अधिक जन्म से एक दूसरे क्यों कम हों फिर ।

पर-सेवा में लगे लगे क्यों बेदम हों फिर ;
जो कुछ भी हो सके साथ ही सब हम हों फिर ।
सांसारिक सम्पत्तिपर सबकासम अधिकार हो ।
वह खेती या शिल्प हो विद्या या व्यापार हो ॥

सभी प्रकृति के पुत्र जान सब को है प्यारी ;
पायें प्रकृति-प्रसाद सभी हैं सम अधिकारी ।
धनाधीश क्यों रहे एक दूसरा भिखारी ;
है यह अति अन्याय लोक-उत्पीड़न-कारी ॥
मिलता दीनों को नहीं समुचित श्रमका मोल है।
प्रकट न देखें लोग पर भरी ढोल में पोल है ॥

एक रहे सुर और दूसरा असुर न हो अब ;
दुर्योधन हो एक दूसरा विदुर न हो अब ।
कटु न एक हो और दूसरा मधुर न हो अब ;
बहुत रहा, वैषम्य जगत्में प्रचुर न हो अब ॥
सुख दुख सम सबके लिए हों इस नये समाज में ।
सब का हाथ समान हो लगा तख़्त में, ताज़में ॥

फैले हैं ये भाव नया युग लाने वाले ;
घोर क्रान्ति कर उलट-फेर करवाने वाले ।
कलि में सतयुग सत्य रूप धर आने वाले ;
समता का सन्देश सप्रेम सुनाने वाले ॥
समता-सरि की बाढ़ में ऊँचनीच बह जायगा ।
समतल जलही की तरह एक रूप रह जायगा ॥

"त्रिशूल"

२
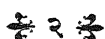
वह स्वर्गीय गीतिकी अनुपम तान कहांसे आती है,

क्या वसन्तकी सखी कोकिला कल-आलाप सुनाती है ?

अथवा, यह स्वतन्त्रता देवी वीणा मधुर बजाती है ;

सरस्वती माँ स्वयं स्वर्ग से श्रवण सुधा बरसाती है ॥

गिरि शिखरोंसे प्रतिध्वनित हो जिसकी मञ्जु मञ्जु गुञ्जार,

अन्तरिक्ष को मध्य भाव से भर देती है बारम्बार ।

जिसको सुन कर सकल चराचर सहसा हुए अहो ! लवलीन,

मानो मन्त्र-मुग्ध हो कोई खड़ा बाह्य विज्ञान-विहीन ॥

नहीं, नहीं, यह नहीं कोकिला अथवा किसी अन्यका गान,

यह तो है एथेन्स नगरकी एक दिव्य वीणाकी तान !

जिसको एक तत्त्वविद् गायक बजा रहा है निपुण नितान्त,

जिसने बहा दिया समताका परम पुनीत प्रवाह प्रशान्त ॥

कल कल करती हुई हर्ष से जिसकी शुद्ध ताल के सङ्ग,

रत्नाकर की नाच रही है, तरल तरङ्गावली विभङ्ग,

पुष्प पुष्पमें हुआ प्रकाशित जिससे 'साम्य' भाव का रङ्ग,

और हृदय में भृङ्ग भृङ्ग के उठने लगी नवीन उमङ्ग ॥

किन्तु, ग्रीष्ममें मलयानिलके एक मन्द उच्छ्वास समान,

अथवा पूर्व दिशामें प्रातः सुभग उषा के हास समान ।

वह झङ्कार गगन मण्डलमें हुई शीघ्र ही अन्तर्द्धान,

क्षण भरमें वह दृश्य विलक्षण होने लगा स्वप्नसा भान ॥

कहीं खड़े प्रासाद चन्द्रका मुख चुम्बन करनेवाले,

कनक-खचित, मणिमुक्ता-मण्डित सबका मन हरनेवाले ।
जिनकी रचना चारु चातुरी देख चित्त चकराता है,
और चकित हो चपल चक्षु भी चित्रित सा रह जाता है ॥
जहां झांकने भी पाते हैं नहीं, कभी चिन्ता, भय, शोक,
जिनके आगे दलित दर्प है देवराजका भी सुरलोक ।
जहां उमड़ता ही रहता है सदा हर्ष का पारावार,
नृत्य गीतवादित्र मण्डली करती अद्भुत प्रेम-प्रसार ॥
कहीं बनीं आनन्द वापियां निर्मल शीतल जल वाली,
जिनके तट पर झूम रहे हैं तरुवर, शुभ शोभाशाली ।
जहां केलि कल हंसकर रहे, शुक, पिक, चातक गाते हैं,
मधुर मधुर मधु पीते मधुकर, मुदित मोर मदमाते हैं ।
कहीं प्रमदवन बने हुए हैं क्रीड़ा-भवन सकल सुख-धाम,
जल-यन्त्रोंसे ललित लतागृह जहां सुशोभित हैं अभिराम ।
जिनमें पूंजीपति, भूस्वामी करते हैं सानन्द विहार,
जिनको पशुता या मनुष्यता का कुछ भी है नहीं विचार,
बिजली को हो देर भले ही कभी चमकते रहनेमें,
मनको हो कुछ देर सोचने में, या मुखको कहनेमें ।
किन्तु इन्होंने एक शब्द भी जो जिह्वासे दिया निकाल,
वह अवश्य भृत्यों को पूरा करना पड़ता है तत्काल ॥
किन्तु, पास ही कहीं पुराना छप्पर पड़ा दूसरी ओर,
यह क्या मूर्तिमान आ उतरा पृथिवीपर दारिद्र्य कठोर ।
इसको राहु समझ कर मानो भाग्य भानु भय-भीत हुआ,

जिस से कहला-शून्य कमल पर अन्धकार अविनीत हुआ ॥

* * * *

पिछली फसल लगी थी पकने उसको सह न सका दुर्दैव,
ओला ने फिर वही किया जो पहिले होता रहा सदैव ।
इसी लिए इस बार बीज भी इनको लेना पड़ा उधार,
उमड़ घुमड़ घन घिरे नवाशा लता खिली फिर किसी प्रकार॥
बीज बो दिया किन्तु एक भी बूंद नहीं बरसा पानी,
बिधि-गति लिखी भालमें अपने किन्तु नहीं जाती जानी ।
इधर महाजन रूप सनीचर हुआ उपस्थित आँखें फाड़,
जिस की क्रूर दृष्टिसे कितने ही घर हुए झाड़-झंकाड़ ॥
पहिले ही कम कष्ट नहीं थे इतने और बढ़ गये साथ,
दीनों और अनाथों से क्या यही उचित है दीनानाथ !
हे नयनो ! अब तुम्हीं बनो घन, बरसो बरसो बह जाओ,
हे शरीर ! तुम स्वेद स्वेद हो नाम शेष मत रह जाओ ॥
कोई कड़ी धूपमें अपना खून पसीना एक करे,
तिस पर भी वह अन्न वस्त्रके बिना हाय ! बे-मौत मरे ।
किन्तु उसी मिहनतसे उसको लक्ष्मी उनके कोष भरे,
जो कि, स्वर्ग-सुख भोग रहे हैं पड़े हाथ पर हाथ धरे !!
ऋद्धि-सिद्धि चुपचाप खड़ी हो जिन पर चँबर ढुलाती हैं,
जिनके घर में नित्य पालना लक्ष्मी आप झुलाती हैं ।
जहां वारुणी ताप नाश कर अति अनुराग बढ़ाती है,
और रात दिन विषय-वासना गहरा रङ्ग चढ़ाती है ॥

किन्तु, दूसरी ओर एक हैं जिनका वृक्ष मूल है वास,
अपना चर्म मात्र है कपड़ा और बिछौना बनती घास !
जिनके सूखे हुए होठ ने कभी न जाना हास-विलास,
जिनको देख घृणासे कोई नहीं बैठने देता पास ॥

* * * *

धनाभाव से पाल नहीं जो सकते हैं अपनी सन्तान ।
इच्छा होनेपर भी उनको दिला न सकते विद्यादान ॥
जिनकी दीन दशा पर कोई नहीं तनिक भी देता ध्यान ।
जिनकी होती सभी प्रार्थना निष्फल कानन-रुदन समान ॥

* * * *

मक्खी भनक रही हैं मुख पर देह जरा से जीर्ण हुआ ।
हाथ पैर गल गये, कोढ़से, अङ्ग अङ्ग सब शीर्ण हुआ ॥
भीख मांगते गये द्वार पर सब दुतकार बताते हैं ।
पथके कृमि की भांति इस तरह कितने ही मर जाते हैं ॥
उनके लिए प्रकृति ही माता है जो शोक मनाती है ।
काले कपड़े पहिर पहिर कर अविरत अश्रु बहाती है ॥
उनके शव को कभी हृदयसे अलग न होने देती है,
बीच बीचमें उन्हें याद कर गरम साँस ले लेती है ॥
फूल फूलसे बूंद बूंद कर मधु, मधु-मक्खी लाती है ।
दिन भर दौड़-धूप कर अपना वह भण्डार बनाती है ॥
स्वार्थ-परायण लोग, किन्तु हम उनपर बल दिखलाते हैं ।
उसी भाँति से सभी कमाते, धनी लूट कर खाते हैं ॥

सजे किन्हीं के साज रेशमी और किन्हीं के खद्दर हैं,
लिये किन्हीं ने शाल दुशाले और किन्हीं ने चद्दर हैं।
कोई पैर न धरते नीचे खड़ी गाड़ियाँ मोटर हैं'
कोई नंगे पैर छानते फिरते काँटे पत्थर हैं॥
क्षुधा पिशाची से पीड़ित हो होंठ चाब रह जाते हैं,
पौष माघ के जाड़ों को भी दाँत पीस सह जाते हैं।
और अन्त में समय सरित की धारा में बह जाते हैं,
हृदय-विदारक अपने अन्तिम शाप शब्द कह जाते हैं॥
"जहां दया या न्याय नहीं वह ईश्वर निर्मित लोक नहीं—
जहाँ पापमय अन्धकार है वहाँ पुण्य-आलोक नंहीं।
तुम इस घोर नरक को, दे रवि देख किस तरह सकते हो,
शीघ्र भस्म कर डालो इसको, अब क्यों खड़े झिझकते हो॥
हे भूगर्भ लीन प्रलयानल! चण्ड चण्ड तुम हो जाओ,
हे वसुधे! इस पाप बोझसे खण्ड खण्ड तुम हो जाओ।
हे तारागण! टूट पड़ो तुम भग्न भग्न सब कर डालो,
मर्यादा दो छोड़, सिन्धु! तुम वारि-मग्न सब कर डालो॥
क्या कहते हो—'नहीं' चलेंगे हम उन नियमोंके प्रतिकूल,
जिन पर चला रहा है हमको जगन्नियन्ता मङ्गल-मूल।
तो क्या उसके नियम हमारे लिए सोगये सब ही हाय!
जो हम सहकर कठिन यन्त्रणा होते आज विदा असहाय॥"

* * * *

सामाजिक, औद्योगिक दोनों जगत व्यवस्था-हीन हुए,

धनी धनी होते जाते हैं और दीन अति दीन हुए।
वे धनमदसे उन्हें समझते हैं अपने कुत्तों से नीच,
इतनी है विस्तीर्ण हो चुकी खाई मनुज-जाति के बीच ॥
धन का ही वैषम्य हुआ है इन सारे कलेशों का मूल,
कोई घूम रहे फूलों में और किन्हींको चुभते शूल।
करो दूर इस विषम विषमता को अब तुमही हे भगवान्!
जिससे सब सुख भाग करें, हों सबके ही अधिकार समान ॥
सुनो! किन्तु वह तान वही फिर लगी गूंजने आज कहां,
राइन की चल चपल वीचियां नाच नाच कर चलें जहां!
जहाँ क्रान्ति की प्रबल वह्नि में भस्म होगया अत्याचार,
और पुराने पाश तोड़कर हैं स्वतन्त्र आचार-विचार ॥
देखो, रोन, सेन भी ऊँचे एल्पसके सिंहासन छोड़,
नीचे चलीं जलधि से मिलने साम्यभाव का नाता जोड़।
तब हे मननशील! क्यों तुमही अबभी समतासे मुखमोड़,
सुखा रहे हो प्रेमलता को, उसके मूलतन्तु को तोड़ ॥
साम्यवाद के महायज्ञ अब सभी ओर आरम्भ हुए,
श्रमी-दलों के नेता ऋत्विक, आन्दोलन पशुस्तम्भ हुए।
स्वार्थ, मूलधन, एकतन्त्रता, इन पशुओं का हो बलिदान,
इसका फल सुखशान्ति वृद्धि हो. सबके हों अधिकार समान ॥
"वागीश्वर"। *

---

* प्रतापसे उद्धृत।

इन्सान है या शैतान ?

यह बड़ा टेढ़ा सवाल है! मेरे पास क्या, किसी भी लेखकके पास इस सवाल का जवाब नहीं। कोई नहीं कह सकता, कोई नहीं बतला सकता और किसी को पता नहीं कि, बोल्शेविज्म् का आचार्य लेनिन, देवता है या राक्षस, इन्सान है या शैतान ?

इंगलैंएड के मि० एच० जी० वेल्स, बेलजियमके मि० वेन्डरबील और अमेरिका के मि० मेकफर्सन सरीखे लेखक सिर पटक कर लौट गये, पर वे लेनिन की असलियत का पता न पासके। जो लोग लेनिनसे मिलने गये, वे अपने पास की ज्ञातव्य और गोपनीय बातें उसकी बातोंमें पड़ कर बतला आये, पर लेनिन से कोई ख़ास बात अपने साथ न ला सके। लेनिन के कमरे से बाहर निकलने पर उन्हें पता चला कि, लेनिन ने उन्हें टटोल लिया, पर, वे लेनिन को न टटोल सके!

लेनिन गरीबों की गरीबी नहीं देख सकता। जब वह गरीबोंके कष्टों पर बोलने खड़ा होता है, तो, आकाश काँपता है, पृथ्वी डगमगाती है, वायु थर्राती है, और सुननेवालों को रोमांच हो जाता है! उस समय, जब लेनिन दोनों मुट्ठियोंको बाँधकर उन्हें हवामें फेंकता हुआ, व्याख्यान देता है, उस समय वह सचमुच देवता मालूम पड़ता है। इच्छा होती है कि उसके चरणोंमें लिपट जाय। न जाने कितने रूसियोंने उसके चरणोंमें लिपट २ कर ही बोल्शेविज़्म् की दीक्षा ली; लेनिन का भाषण भी बड़ा विकट होता है। सिंहकी तरह दहाड़ता हुआ वह मंचपर चढ़ता है। उसके व्याख्यानमें लोचदार बातें नहीं रहतीं। सारी बातें कर्कश और कठोर होती हैं। पर, कहनेका ढंग, आवाज़ का उतार और चढ़ाव, ऐसे ग़ज़बका होता है कि, श्रोता कभी तो पत्थर की दीवार और कभी काँपती हुई नाव की तरह हो जाते हैं।

जिस समय लेनिन शासन-सभामें खड़ा होकर किसी बात का खण्डन करता है, तो, मानों बादल गरजते और बिजली तड़पती है। बोलनेमें लेनिन की टक्कर संसारमें बिरले ही वक्ता ले सकते हैं। ४-५ घण्टे तक लगातार बोलते रहना उसका साधारण अभ्यास है। १८९४ के दिनोंमें लेनिनने रूसके ग्रामोंमें घूम-घूमकर चौबीसों घण्टे व्याख्यान देते रहनेका अभ्यास किया था। ईश्वरने उसे आवाज़ भी इतनी ज़ोरदार दी है कि, लाख-पचास हजार की भीड़ बड़े मज़ेमें उसकी बातें स्पष्टतः सुन सकती है।

जिस समय लेनिन खीजकर त्योरियाँ बदल-बदलकर अपने चारों तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देखता है, तो यही मालूम पड़ता है कि, वह राक्षस है! उस समय उसका चेहरा महा भयंकर राक्षसकी भाँति हो जाता है। उसकी आँखोंमें एक विचित्र शक्ति है। उससे आँखें मिलाकर बातचीत करनेका जिन्होंने कभी साहस किया है, वे निरन्तर असफल रहे हैं। वे उसकी आँखोंकी चमकके चमत्कारसे हकीकतको भुलाकर बेसिर-पैरकी बातें करने लगते हैं। लेनिन उस वक्त अपने मतलबकी बात शैतानकी तरह उसके पेटसे टटोल लेता है!

लेनिन बड़ा भारी षड़यन्त्रकारी और अराजक गुप्तदूत रह चुका है, अतः उसके हाथ अक्सर पतलूनकी जेबोंमें पड़े रहते हैं। जिस समय वह अपने बराण्डेमें किसी बातपर विचार करता हुआ टहलता है, तो वह साक्षात् मनुष्य मालूम पड़ता

है। इस प्रकार उसका चरित्र विचित्र है। उसको शैतान कहा जाय या इन्सान, यह बात हमारी समझमें कुछ भी नहीं आती।

जन्म और जीवनी।

लेनिन एक रूसी ज़मींदारके घर उत्पन्न हुए थे। इनके पिता सरकारी खिल्लतों, खिताबों और ख्यातिके तलबगार थे। वे राज-सत्ताके भक्त और सम्पत्तिके अनुरक्त थे। ऐसे व्यक्तिके घरमें यूलियनाव व्लडोमीर लेनिनने जन्म लिया। कई कालेजोंमें इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। यूरोपकी अनेक भाषाओंका इन्हें बख़ूबी ज्ञान है। कालेजमें पढ़ते समय ये बड़े उद्दण्ड और प्रतिभाशाली छात्र थे। कालेजकी विवाद-समितियोंके ये प्राण थे।

कालेजमें मार्क्सके साम्यवादको पढ़कर इनकी रुचि साम्यवादके अध्ययनकी ओर बेतरह झुक पड़ी। कालेजकी छात्रावस्थामें ही इन्होंने युरोपके बड़े बड़े विद्वानोंकी लिखी हुई साम्यवाद-सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन कर डाला। जर्मनी और फ्रान्सके साम्यवादियोंसे इनका पत्र-व्यवहार भी आरम्भ हो गया। इनका एक भाई अराजक हो गया। उसने हरतरहके उत्पात किये। उस समय किसानोंमें घोर असन्तोष आरम्भ

हो गया था। प्रिन्स क्रोपटकिनकी तूती बोल रही थी। किसानों में भीषण अराजकता सुलग उठी थी। अन्तमें इनका भाई जारके प्राण-घातके षड़यंत्रमें पकड़ा जाकर फाँसी पर लटका दिया गया।

लेनिन कालेजसे निकलकर भी अपने काममें लगे ही रहे। इन्होंने संसार भरके साम्यवादी नेताओंके महत्वपूर्ण ग्रन्थोंका अध्ययन किया। जर्मनीके साम्यवादियोंसे इनका स्नेह भी बढ़ गया। कई साम्यवादी सभाओं और कान्फरेन्सों में इन्होंने ज़ोरदार भाग लिया। लेनिन को रूसी किसानों का उद्धार साम्यवाद द्वारा ही सम्भव दीख पड़ा। एक वर्ष की अवस्थामें ही इन्हें एक राजनैतिक अपराधमें कैदका कठोर दण्ड मिला। सज़ा भुगतनेके बाद ये स्वीटज़रलैंण्ड चले गये। स्वीटज़रलैंण्ड रहकर इन्होने अपने देशकी और भी महत्वपूर्ण सेवाकी। वहाँ इन्होंने रूसी किसानों की मुक्तिके सम्बन्धमें कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। इतनी अच्छी पुस्तकें रूसी भाषामें अभीतक प्रकाशित नहीं हुई हैं। इन पुस्तकोंका रूसमें बाइबिलकी भाँति प्रचार हुआ।

रूसमें उस समय ज़ारका कोप काम कर रहा था। अराजकताका समुद्र भी लहरें मार रहा था; रह रह कर तूफान आते थे। बिजलियाँ कड़कतीं और कौंधे लपकते थे। ज़ोर, जुल्म और ज़ारशाही तप रही थी। सन्देह मात्र पर कोई भी व्यक्ति आजन्म कैदकी सजा भुगतनेके लिये साइबेरिया जैसे भयानक

और ठंडे मुल्कमें भेज दिया जाता था। सैकड़ों रूसी कैदखानेमें ही भोजन बिना भूखों मर गये, नदियोंमें डुबाकर मार डाले गये। सैकड़ों देशभक्त नेता सड़ककी लालटैनोंसे टांग कर फांसी देकर मार डाले गये। भयानक चीत्कार और कोलाहल सारे देशमें छाया हुआ था। सच्चे देशभक्त तपे हुए सोनेकी भाँति अपने कर्त्तव्य-पथपर निर्भय हो हथेली पर प्राण रखे हुए, देशकी स्वाधीनताका युद्ध लड़ रहे थे।

लेनिन इन भयानक दिनोंमें कई बार रूस गये और गुप्त रह कर अपना कार्य सम्पन्न करते रहे। इसी बीचमें इन्होंने यूरोपकी भी यात्रा की।

लेनिनको अन्तर्राष्ट्रीय दाँव-पेंच जाननेकी बड़ी लालसा थी। इंगलैण्ड, फ्रान्स तथा जर्मनीमें अन्तर्राष्ट्रीय चालें चली जा रही थीं। लेनिनने भी भेष बदलकर जर्मन और फ्रेंच गुप्तदूतोंका पीछा किया और कैसरकी धूर्त्तता-भरी कारवाइयोंका पता लगाया। इंगलैण्डके बड़े बड़े दिग्गज राजनीतिज्ञोंकी भीतरी बातें जाननेकी चेष्टा की। सर एडवर्ड ग्रे और लार्ड मारले आदिके दांव-पेंच समझे। बड़े बड़े सैर सपाटे किये; पर अपने देशकी याद नहीं भुलाई।

१९०५से रूसका परदा बदला। ज़ारने अपनी सुधार-भिक्षा-भिखारिणी प्रजाका रोमांचकारी हत्याकाण्ड कराया। समस्त रूसमें सनसनी फैल गई और प्रजापक्षके बड़े बड़े आदमियोंकी गिरफ़ारियाँ फिर शुरू हो गईं। दमननीति और अत्याचारका

बाजार फिर गरम हो उठा। लेकिन रूसी कायर या कपूत नहीं थे। उनके काम करनेवाले प्राणोंका मोह करना नहीं जानते थे। हजारों युवकों और युवतियोंने गुप्तसमितियां बना-बना कर, रात्रिमें गांव-गांव घूम-फिर कर अराजकताका प्रचार किया। किसानों और मज़दूरोंको तैयार किया। इधर ज़ार अपनी नंगी तलवार चमका रहे थे, तो, उधर अराजक-दलके लोग भीषण षड्यन्त्र रच रहे थे! दोनों ओरसे, सत्ता और स्वाधीनता का युद्ध तुर्की-बतुर्की लड़ा जारहा था। १६१३ तक यह संग्राम पूरे जोरोंपर रहा। १६१४में महायुद्ध आरम्भ हो गया। ज़ारका ध्यान युद्धकी तरफ खिंच गया और इधर अराजकोंने भीतरी षड्यन्त्रों द्वारा अपनी तैयारी आरम्भ कर दी।

लेनिन उस समय रूसमें नहीं थे; यदि होते, तो निश्चय फांसीपर लटका दिये जाते। वे सदा गुप्त रहकर रूस आते और अपनी सभाओंमें बोलकर तथा आदेश देकर चले जाते थे। यदि युद्ध के समय लेनिन रूसके भीतर रह सकते, तो, रूसी राज्य-क्रान्तिका कुछ और ही रूप होता।

१६१७ तक लेनिन स्वीटज़रलैण्डमें ही रहे। राज्यक्रान्तिके घटित हो जानेके बाद ये एक शराबके पीपेमें छिपकर पेट्रोग्राड पहुँचे और ख़ास ज़ारके महलके भीतर एक तहखानेमें कई दिन तक छिपे पड़े रहे! *

---

* नोट—कुछ लेखकोंका कथन इसके विपरीत भी है। पर, अधिकतर लेनिन इसी भाँति छिपकर आया जाया करते और रहा करते थे।

लेनिनके सिद्धान्त।

—— ० ——

लेनिनके वर्त्तमान विचार जो कुछ हैं, वे तो हैं ही, पर रूसकी राज्यक्रान्तिके पहिलेतक लेनिन क्या सोचते थे और क्या करते थे, यह भी जानने योग्य बात है। गत ३० वर्षके भीतर लेनिनने रूसमें जो कुछ काम किया है, वह साधारण काम नहीं है। १८८६में लेनिन एक घोर अराजक और षड़्यन्त्रकारी व्यक्ति थे। पर, बम द्वारा या महलोंमें सुरङ्ग लगाकर अपने उद्देश्योंकी सफलता नहीं चाहते थे। इनके सुरंग जनताके हृदयोंमें हरदम सुलगा करते थे।

लेनिन जानते थे कि रूसकी सत्ता किसानोंके हाथमें होगी। इसीलिए लेनिन बार-बार किसानोंमें काम करनेका ज़ोर देते थे। लेनिनके पुराने मित्र मि० ट्राटस्की मज़दूरों और सैनिकोंके बीचमें काम करनेका दम भरते रहते थे। पर, लेनिन अपने विचारोंपर अटल रहे और निरन्तर कृषक-क्रान्तिकी तैयारीमें जुटे रहे। किसानोंकी दुर्दशा, पूंजीवालोंके स्वार्थ, अर्थ-लोलुप व्यापारियों-के हथकण्डों और नौकरशाहीके जुल्मोंका सजीव चित्र उन्होंने

बार बार किसानोंके नेत्रोंके सामने खींचा। कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं, पैम्फलेट लिखे, बँटवाये और गाँव गाँवमें उनका प्रचार कराया, गुप्त-समितियाँ स्थापित कराईं, और झोपड़े-झोपड़ेमें साम्यवादका प्रचार कराया। १३ वर्ष लगातार यह काम हुआ, और तब कहीं रूसी किसानोंकी समझमें आया कि राजा एक बड़ा व्यापारी और पूँजीपति है, जो छोटे व्यापारियों द्वारा श्रम-जीवियोंके पसीनेसे खींचा हुआ धन छीनकर मौजें करता है, और अधिक धन वसूल करनेके लिए, तरह तरहके शासन और दण्डोंका विधान किया करता है। ऐसे चाण्डाल राजाके दूत, अमलेवाले, सेनावाले, पुलिसवाले और टेक्स वसूल करनेवाले, सबके सब खून पीनेवाले, और गरीबोंकी सूखी हड्डियोंतकको चबा जानेवाले नर-पिशाच होते हैं। रूसी किसानों की समझमें यह भी आगया कि, पढ़े-लिखे, और सुधार-सुधार पुकारनेवाले अपने भाई ही हम ग़रीबोंके बन्धनोंको स्थायी बनानेमें सहायक बनते हैं।

किसानोंके बीचमें एक भाव यह भी बोया गया कि, भूमिका निःशुल्क विभाजन किया जाय। किसान जितनी भूमि जोत बो सके, जोते और बोवे। उसको उपजका स्वामी किसान हो, न कि राजा या कोई पूंजीवाला व्यापारी। धनको परिश्रम करने-वालोंके बीचमें बराबर बराबर बाँट देनेकी बात ऐसो थी कि, मोटी समझवाले किसानोंको भी भा गई। मज़दूरोंमें यह भाव भरा गया कि, मिलों और फैक्टरियोंकी उन्नति तुम्हारे बल और

तुम्हारे परिश्रमसे हुई है। उनका सारा मुनाफ़ा तुम्हारा है। स्वामीको तो पूँजीका सूद मात्र मिलना चाहिये, न कि पूरा मुनाफ़ा। उन्हें यह भी बतलाया गया कि देखो, तुम्हें भूखों मार कर चौदह चौदह घण्टे परिश्रम कराकर, ये व्यापारी अमीर होते जाते हैं, और तुम्हें भर पेट अन्नतक नसीब नहीं होता। वे मोटरों पर चढ़ते हैं, और तुम मिलोंमें लंगड़े-लूले हो जानेपर भी अपने घरपर चैनसे बैठकर अपने पेटका ठिकाना नहीं कर पाते!

इस प्रकार लेनिन अपनी मोटी स्कीम १९०५से काममें ला रहे थे। उनका साहित्य बराबर प्रचार पाता जारहा था। उनके गुप्त दूत, उनके गुप्त उपदेशक रूसकी झोपड़ी झोपड़ीमें अपना राग अलापते फिर रहे थे। हाँ, इस काममें लेनिनही नहीं, अन्य बड़े-बड़े देशभक्त भी थे। पर, लेनिन, काम करने-वालोंमें सबसे भयङ्कर और साहसी थे।

लेनिन, रूसमें श्रमजीवियोंका सच्चा प्रजातन्त्र स्थापित करना चाहते थे, पर, १९०५तक, रूसके बड़े-बड़े देशभक्त नेता प्रजातन्त्रके स्थानमें परिमित राजसत्ता स्थापित करके सन्तुष्ट हो जानेकी बात कहते थे। इसी लिए, सच्चे साम्यवादी-समुदायके लोग इन राजसत्ताके स्वप्न देखनेवालोंसे अलग रहकर अपना काम कर रहे थे।

इस विकट काममें, लगभग सभी बड़े-बड़े साम्यवादक क्रान्तिकारियोंको देशके लिए कारागार भुगतना पड़ा। यहांतक कि, रूसकी राज्यक्रान्तिके समय, सच्चे साम्यवादी नेताओंको

संख्या जेलोंमें अधिक और नगरोंमें कम रह गई। रूसकी राज्यक्रान्तिको उभाड़ देनेवाला ज़ारका ही मन्त्री प्रोटोपोपाफ था, जिसने पेट्रोग्राडमें अन्नकी ऐसी तबाही डाल दी कि, ग़रीब लोग एक-एक रोटीके लिए ख़ून करनेपर उतारू हो गये। हुआ भी यही। हजारों तड़पते और तलफलाते हुए भूखे लोग पेट्रोग्राडमें घूमने और लूटमार करके अशान्ति फैलाने लगे। सैनिक भी ज़ारशाहीके अत्याचारोंसे दुःखी थे, दूसरे जर्मनीके द्वारा परास्त होनेके कारण ज़ारको शत्रुवत् समझने लगे थे। जब ज़ारको सूचना मिली कि, पेट्रोग्राडमें क्रान्ति उठ खड़ी हुई है, तो उन्होंने दमन करनेके लिए सेनायें भेजीं। पर, सेनायें पेट्रोग्राड आतेही जनतासे मिल गईं, और इस प्रकार पेट्रोग्राडपर जनताका अधिकार हो गया। बड़े सौभाग्यकी बात यह थी कि, पेट्रोग्राडमें बड़े-बड़े देशभक्त नेता मौजूद थे। उन्होंने घण्टों-के भीतर प्रबन्धक दल और कमेटियाँ तैयार कीं। स्वयंसेवकोंको नियुक्त करके पुलिसका काम लिया।

पर, ये नेता धनके समान विभाजनके पक्षपाती नहीं थे। ये केवल प्रजातन्त्रकी स्थापना चाहते थे। ऐसाही उन्होंने किया भी। प्रिन्स लौफ प्रधान मन्त्री बने। उसके बाद करेन्सकी-को प्रधान मन्त्री बनाया गया। पर, रूसमें बीज कुछ और ही बोया गया था, और उसके फलोंको तोड़नेके लिये जर्मनीकी सहायतासे रेलवे ट्रेन द्वारा लेनिन और ट्राटस्की दोनों मित्र रूसी सीमामें आकर दाखिल हो गये। लेनिनके आते ही समस्त

किसान और मज़दूर प्रजातन्त्रकी स्थापना करनेवाले नेताओंका साथ छोड़कर लेनिनके साथ हो गये। कुछ ही महीनोंके भीतर लेनिनने कमज़ोर प्रजातन्त्रकी शासन-प्रणाली उलट दी। करेन्सकी इंगलैण्डको भाग गये। और इस प्रकार लेनिनने साम्यवादी-शासनका प्रचार और प्रस्तार आरम्भ कर दिया।
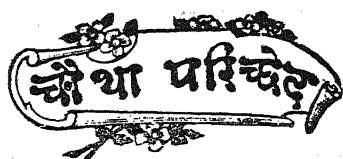
मानवधर्म : बोल्शेविज्म् ।

बोल्शेविज्म्की कटुनिन्दा करनेवाले इस समय यूरोपमें बहुत लोग उत्पन्न हो गये हैं । यूरोपके इन निन्दकोंमें बड़े-बड़े लेखक और सम्पादक भी शामिल हैं । हमारा ख़याल है कि, बोल्शेविज्म्की निन्दा करना पाप है । हम बोल्शेविज्म्के किञ्चित् भी समर्थक नहीं । पर, साथही, हमें उससे तनिक भी द्वेष नहीं । यथार्थमें बोल्शेविज्म् कोई नई चीज़ नहीं है । वह सृष्टिके आरम्भसे मानवधर्मका एक अङ्ग, और वह भी ऐसा-वैसा नहीं, एक व्यापक अङ्ग रहा है । बोल्शेविज्म् मानवधर्मका एक उच्च आदर्श है । एक व्यावहारिक आदर्श है ।

साम्यवादका वह परिष्कृत रूप है । साम्यवाद देवताओंकी वह भावना है, जो मनुष्योंमें काम करती रहती है । एक मनुष्य जब दूसरे दुःखी व्यक्तिको देखकर सहानुभूतिसे मर्माहत हो पड़ता है, उसी क्षण साम्यवाद अर्थात् बोल्शेविज्म्का जन्म होता है । दुःखको संसारसे हटानेका लक्ष्य बोल्शेविज्म्में भरा हुआ है ।
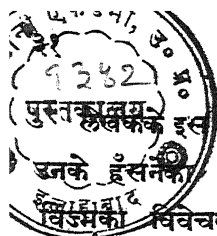
लेखकके इस निष्कर्षको पढ़कर कुतर्की पाठक हँस पड़ेंगे! उनके हँसनेका कोई फल नहीं। हम केवल और शुद्ध बोल्शेविज्मका विवेचन कर रहे हैं। हमें उसके प्रचार-साधनों या साधकोंके विषयमें, इस स्थानपर कुछ नहीं कहना है।

बोल्शेविज्म् सिखलाता है कि, ग़रीबकी सूखी रोटी छीनो मत--उस रोटीपर थोड़ासा नमक या मक्खन रख दो। बोल्शेविज्म्के गहरे अर्थ यही हैं।

मज़दूर दिनभर परिश्रम करता है, शामको न मालूम किस प्रकार थका माँदा रूखा-सूखा अन्न पेटमें झोंककर सो रहता है। उसके ग़रीब बच्चे निर्दोष होते हैं। पर, बेचारे बड़े भोले होते हैं। अपने बापकी ग़रीबीके कारण अपने नन्हेंसे बालकपनको बड़े कष्टोंमें बिताते हैं। फटे-पुराने चिथड़े उनके कोमल अंग को ढाँकते हैं। उनकी नन्हीं-नन्हीं हथेलियां, मुरझाई हुई गलरियां, भूख और प्याससे सताई हुई, दुःखके आंसुओंसे भीगी हुई कजरारी आँखें, संसारमें आकर आरम्भसे ही कठोर तपस्या करने लगती हैं। वे पत्थर हैं, जो यह दशा देखकर पसीजते नहीं: और मानव-धर्मकी ठेस खाकर मर्माहत नहीं होते।

वे बड़े पापी हैं, कठोर हैं, और सचमुच राक्षस हैं, जो गरीबोंके पसीनेको बेचकर लक्ष्मीपति और कुवेरशरण बनकर मोटरों और बग्घियों पर हवा खाते फिरते, आमोद-प्रमोदमें मग्न होते, और दुःखी संसारको भुलाये हुए, अपने आपको पापके गड्ढेमें फेंकते हैं। बेचारा ग़रीब दूरपर खड़ा हुआ ताकता है;

ललचाता है ; ठेसें खाता है ; अकुलाता है, सोचता है; चिन्तित होता है। वह विचारता है कि, मैं दिनभर परिश्रम करता हूं। जिन्दगी ख़तम होनेको आई, पर दुनियांका कोई सुख न जाना। ये अमीर लोग जन्मसे ही पालनोंमें खेलते, मन चाहा खाते-पीते, पहिरते-ओढ़ते और कुर्सी-गद्दे तोड़ते हैं, घण्टे दो घण्टे बैठकर सौदा-पता, बही-खाता, और हिसाब-किताब कर देते हैं, साढ़े चार बजे नहीं कि, आफ़िसके सामने मोटर या बग्घी आ जाती है ; अकड़ते हुए निकलते और सवारीपर चढ़कर घूमने, टहलने, खेलने, कूदने, आमोद-प्रमोदमें मस्त होनेके लिये चल पड़ते हैं। क्या बात है भगवान्! क्या मुझमें कमी है और कौनसी इन अमीरोंमें बड़ाई! अरे, कभी तो एकाध दिनके लिए ही सही, ये सुख दिखलाये होते!

* * * *

जब हारा-थका ग़रीब घरपर पहुँचता है, तो, और व्याकुल होता है। पासमें पैसे नहीं, और घरमें नाज-पानीकी माँग पड़ती है। मोटा-झोटा, जो कुछ बन पड़ता है, खा लेता है। क्या इन बेचारोंको इसी लिए जन्म मिला है?

क्या दुनियां इतनी अचेत हो जाय, कि इनको तरफ एक नज़र उठाकर देखे भी नहीं? क्या खूब, बेखुश! जो ग़रीबों के हितकी बात कहते हैं वे बोल्शेविक-राक्षस, खूनी, क्रान्तिकारी, अशान्तिकारी कहे जाते हैं। बलिहारी इस बुद्धिकी, जो एक भाईको, दूसरे भाईकी दुर्दशा देखने तकसे वंचित करती है।

उस सुखमें क्या लज्ज़त, जो ऊपरसे सुख और भीतरसे विषम दुःख बना हुआ है? घरके बाहर ग़रीबोंके झोपड़ोंसे करुणाक्रन्दन सुनाई पड़ता है, और घरके भीतर पियानो और हारमोनियमकी मोहिनी सुध्वनि गूँज रही है। यह विषम सुख, सच्चा सुख नहीं। मनुष्य-धर्मके विरुद्ध है।

साम्यवाद इस विषमताको मिटाना चाहता है। बालशेविज्म् इसे बुरा कहता है, और इस विषमताको दूर करनेकी प्रार्थना करता है।

तब भी, साम्यवाद को लोग ज़हर समझते हैं, और बोलशेविज्मको रक्तकाण्ड कहकर पुकारते हैं। कहते हैं, ये भाव तो संसारकी व्यवस्थाको नष्ट कर देनेके लिए फैलाये जारहे हैं!

"बोलशेविज़म्"का जन्म ।

यह भी जानने लायक बात है कि, बोल्शेविज़म् का जन्म कैसे हुआ ? इसका जन्म एकाएक नहीं हुआ है। घटनाओंसे परिचय न रखनेवाले सम्भवतः यह समझते होंगे कि, रूसकी राज्यक्रान्ति चटपट हुई, और तुरन्त बोलशेविज़म्का भी अवतरण हो गया, क्योंकि, क्रान्तिके पहिले बोलशेविज़म्का दुनियां पर नाम भी सुनाई नहीं पड़ा था।

एक प्रकारसे यह बात सही है कि, क्रान्तिके पहिले रूसमें बोलशेविज़म् नामका कोई मत प्रचरित नहीं हुआ था, पर शब्दका जन्म बहुत पहिले हो चुका था। १६०५में यह स्पष्ट रूपसे व्यवहारमें आने लगा। असलमें, अराजक दलके जन्मके साथ-साथ रूसमें एक लोकसत्ता-वादी साम्यवाद चाहनेवालांका भी दल उत्पन्न हो गया था। १६०२में इस दलमें फूट फैली। नये दल ने यह निर्णय किया कि, ज़ारका नामही मिट जाना चाहिए। पूर्ण प्रजातन्त्रकी स्थापना होनी चाहिए। १६०५में सुधार चाहनेवाली प्रजाका क़त्लेआम देखकर नये साम्यवादी दलने और भी ज़ोर पकड़ा। अराजक दलके लोग भी उसमें

जा मिले। दूसरी तरफ लोकसत्तावादी भी ज़ारकी सत्ताके पूर्ण विरोधी हो गये। यद्यपि, उनमें यह भीतरी भावना काम कर रही थी कि, यदि ज़ार उचित सुधार दे, तो, काम चल सकता है। १९१३में, साम्यवादी दलने और भी ज़ोर पकड़ा। समष्टिवादका एक सुधारित और व्यावहारिक रूप स्कीमके रूपमें सामने आया।

साम्यवादी पञ्चायतोंके शासनकी व्यवस्था सोची गई। किसानोंमें भूमिके बाँट दिये जानेकी बात तय हुई। मज़दूरोंको मिल्स और फैक्टरियोंका स्वामी बना देने, और लाभके समानतः बांट देनेकी स्कीम भी सोची गई। अमीरोंके महल छीनकर उनमें ग़रीब आदमियोंको थोड़े भाड़ेपर रखने और ग़रीब बच्चोंको रोटी-कपड़के साथ मुफ़्त शिक्षा देनेकी प्रस्तावना भी सामने आई।

दूध पीनेवाले बच्चोंको मुफ़्त दूध और बिस्कुट देने तथा उनको माताओंके लिए पौष्टिक भोजन देनेकी व्यवस्था भी निश्चित की गई।

जब लेनिन ने रूसके शासनकी बागडोर अपने हाथमें ली, तो, उन्होंने उपर्युक्त व्यवस्थाओंको सर्वसम्मतिसे व्यावहारिक रूप देना आरम्भ कर दिया। बस, उनके ऐसा करने मात्रसे यूरोप भर चिढ़ उठा। इंगलैण्ड और फ्रान्सके पूंजी-पतियोंकी धुकधुकी चलने लगी। साम्राज्य-वादियोंकी आँखोंके नीचे अंधेरा छागया। वे अपने सर्वनाशकी कल्पना करने लगे।

वे सोचने लगे कि, अगर सभी स्थानोंमें यह रोग फैला, तो इन बड़ी २ मिलों और खानोंका मुनाफा मजदूर लोग छीन लिया करेंगे। पूंजी लगानेवालों की सारी विभूति मट्टीमें मिल जायगी। ये घोड़ेगाड़ियाँ और दर्जनों मोटरोंके रखने की क्षमता जाती रहेगी। वाणिज्य और व्यापारकी मेशीनरी चकनाचूर हो जायगी। फिर तो, गद्दी-तकिया लगाकर माल उड़ानेवाले को भी मेहनत-मशक्कत करके पेट भरना पड़ेगा। मज़दूरों और किसानोंके प्रतिनिधि जो कुछ ऊटपटांग व्यवस्थापत्र देदिया करेंगे, वही शासन-नियम कहलायेंगे। पढ़े-लिखे लोगोंकी भी महिमा मलीन हो जायगी। मस्तिष्क की महत्ता जाती रहेगी। विलासिताकी सामिग्री घट जायगी। शैम्पेन और व्हिस्कीके ग्लास चूर हो जाँयगे। सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा।

यूरोप भरमें एक विशेष प्रकारकी सनसनी फैल गई। फ्रांस और इंगलैण्डके सम्पत्तिवादियोंने सरकारोंको उभाड़ा। वे थीं तो स्वयं साम्राज्यवादिनी और अर्थलोलुप सरकारें, उधर प्रोत्साहन भी खासा मिला। बस रूसके चारों तरफ घेरा डाल दिया गया। छोटीमोटी रूसी रियासतों को आर्थिक और सैनिक सहायता देकर लेनिन को घोटकर मार डालनेका ठान ठन गया। सोचा गया कि, इस प्रकारकी कुव्यवस्थाके साथ बोल्शेविक सेना अपने घरेलू शत्रुओंका सामना कर न सकेगी। एक ढेलेसे दो शिकार मर जाँयगे। एक तरफ बोल्शेविक आन्दोलन

धराशायी हो जायगा, और दूसरी ओर रूसकी रही-सही शक्ति भी नष्ट हो जायगी।

पर, बोल्शेविक मज़हब ऐसा विलक्षण था कि, उसे चिन्ता करनेका कोई अवसर ही नहीं आया! लेनिनने शत्रु-सेनाओंमें बोल्शेविक मज़हबके पैम्फ्लेट छपाकर खूब बँटवाये। उन पुस्तिकाओंमें बड़ी मार्मिक भाषामें लिखा रहता था कि, "सैनिको सम्पत्ति-वादियोंके स्वार्थों की रक्षा करनेके लिए अपने प्राण क्यों देते हो। हम किसीके विरोधी नहीं। हम तो केवल अपने देश की रक्षाके लिए, बोल्शेविज्म् का प्रचार करते हैं। ये अमीर पूंजीपति ग़रीबोंके परिश्रम द्वारा स्वयं मालामाल होते जाते हैं। और ग़रीब लोग उनकी सम्वृद्धिके लिए पसीना बहाते हैं। सरकारें बनाते हैं। वे दूसरोंको गुलाम बनाकर अपने नहीं, वरन् अपने दुःखदायी सम्पत्तिवादियों और साम्राज्यवादियोंके लिए बाज़ार और क्षेत्र तैयार करती हैं। भला, यह भी कोई समझदारी की बात है? इसलिए, सैनिको, बोल्शेविज्मके विरोधी मत बनो। अपने देशोंमें जाकर, सबसे पहिले सम्पतिवादियों का नाश करो। अपने परिश्रमका पैसा आपसमें बाँटकर सुखसे खाओ पीओ।"

इस प्रकारकी लाखों पुस्तिकायें अंग्रेज और फ्रेंच, पोलिश और स्थूनियन सैनिकोंमें बाँटो गईं। फल यह हुआ कि, इन सैनिकोंमें असन्तोष फैल गया। बहुतेरे सैनिक बाग़ी हो गये। लड़नेसे इनकार कर बैठे। उधर, यूरोपके अन्य देशोंके, जैसे

फ्रान्स, इंगलैंड, इटली आदिके मजदूर-दलोंने बोलशेविकोंके विरूद्ध चढ़ाई करने और घेरा डालनेका घोर विरोध किया। सरकारों को दोनों ओर से विवश हो कर अपनी २ फौज़ें वापस बुलानी पड़ीं !

इस प्रकार, बोल्शोविज्मका जन्म और पालन-पोषण रूसमें बड़े सुन्दर और उपयुक्त समयमें हो सका।

पञ्चायती प्रजातन्त्र ।

वो लशेविक शासन-प्रणालीका दूसरा नाम रूसी भाषामें सोवियट शासन-प्रणाली (अर्थात् पञ्चायती प्रजातन्त्र) है। इन सोवियटोंको बिल्कुल पञ्चायत मान लेना चाहिए। मिलों और फैक्टरियोंमें श्रमजीवियोंकी कमेटियाँ सब कुछ करने धरनेवाली हैं। उनके हाथमें सारा प्रबन्ध है। वेतन वे ही बाँटती हैं। कामपर आदमियोंकी नियुक्ति उनके ही परामर्शके द्वारा होती है। किसी श्रमजीवीके कुसूर करनेपर दण्डका विधान भी इन्हीं कमेटियों द्वारा होता है।

मुनाफ़ेका हिस्सा-बाँट भी इन कमेटियोंके ही हाथमें है। सेनाका भी ऐसाही प्रबन्ध है। सैनिकोंकी कमेटियाँ ही सारा प्रबन्ध करती हैं। व्यवस्था और नियम-निर्माणका भी बहुत कुछ काम उन्हींके अधिकारमें है। वे ही ड्यूटी बाँधती हैं। युद्ध लड़ने या न लड़नेका फैसला करती हैं। देशकी रक्षाकी कुल जिम्मेदारी सैनिक-सभाके अधीन है। अपने अफसरोंकी नियुक्ति और उन्हें शासन-अधिकार प्रदान करना,

अपना प्रतिनिधि चुनना, आदि भी इन कमेटियोंके द्वारा ही होता है। आजकल यह बोल्शेविक सेना, "लाल सेना"के नामसे पुकारी जाती है।

किसानोंकी कमेटी भूमिके हिस्सा-बाँट, तथा सरकारी कोषमें सहायक धन भेजनेकी जिम्मेदार है। हरेक गाँवमें ऐसी पञ्चायती कमेटियाँ अपना काम करती हैं। किस घरमें कितने हल-धर हैं, उन्हें कितनी भूमि मिलनी चाहिए, इस बातका निश्चय इन्हीं कमेटियों द्वारा होता है। सरकार अपनी तरफसे भी अन्नकी पैदावार कराती है, ऐसा करनेवालोंको सरकारी कोषसे वेतन मिलता है। यह वेतन किसी भी शासकके वेतनसे कम नहीं होता। यदि, लेनिन स्वयं प्रति सप्ताह ४० रु० लेता है, तो, सरकारकी तरफसे खेती करनेवाले किसानको भी ४०रु० प्रति सप्ताहका वेतन मिलता है।

पुलिस अब डंडेबाज़ पुलिस नहीं रह गई। वह केवल रक्षक और सेवकका काम करती है। उसे रिश्वत लेनेकी ज़रूरत नहीं रह गई। प्रत्येक देश-रक्षक (पुलिसमैन) का वेतन सरकारी अधिकारीके वेतनके बराबर है। शरीरके परिश्रमके ऊपर वेतनका निश्चय अवलम्बित कर दिया गया है। मस्तिष्कका कोई मूल्य नहीं रह गया है। दिमाग़से काम करनेवालेको भी उतना ही वेतन मिलता है, जितना कि, शरीरसे पसीना बहाकर सरकारके लिए काम करनेवालेको दिया जाता है।

अनाथों और असहायों, तथा अपाहिजोंको सरकारकी तरफ

से भोजन-वस्त्र दिये जाते हैं। हाँ, एक बात ज़रूर है कि शासन-नियमका उल्लंघन करनेवालोंको कड़ा दण्ड दिया जाता है। उनमें रियायत नहीं की जाती। बोलशविज़मके विरुद्ध आवाज़ उठानेवालेको कोई भी कड़े से कड़ा दण्ड दिया जा सकता है।

श्रमजीवी स्त्रियोंको समान अधिकार प्राप्त हैं। उनका देशमें बड़ा आदर है। यूरोपके कुछ निन्दक लेखकोंने रूसी स्त्रियोंकी अवस्था तथा अधिकारोंपर बहुत कुछ बुरा-भला लिखकर संसारमें भ्रम फैला दिया हैं। बोल्शेविक सरकारने इसका प्रतिवाद छपाया है। उसने दिखलाया है कि, स्त्रियोंको कितनी सच्ची स्वाधीनता दी गई है और रूसकी स्त्रियाँ कितनी सच्चाई और प्रतिष्ठाके साथ अपने अधिकारोंका उपभोग कर रही हैं।

एकबार यूरोपमें यह अपवाद उड़ा था कि, बोल्शेविक सरकारने रूसी स्त्रियोंको "वेश्या"के रूपमें मानकर उनका 'सार्वजनिक उपभोग' निश्चित किया है! भ्रम फैलाने वालेने कितना भयंकर पाप किया है। भला, जो शासन-प्रणाली मनुष्य मात्रके समान अधिकारों की व्यावहारिक स्थापना करना जानती है क्या वह स्त्रियोंके चरित्रपर ऐसा कलंक लगाकर अपनी राष्ट्रीय कीर्तिको पद-दलित करेगी? क्या रूसकी स्त्रियां, जिनके पिता, पति और पुत्र तथा भाई, आज समानाधिकारके सच्चे भावोंपर निछावर हो कर अपने देशके गर्वको सींक खड़ी किये हुए हैं, कभी इतना पतित स्थान स्वीकार कर सकती हैं?

बोल्शेविक सरकार देशभरके ग़रीब और असहाय बच्चों की स्वयं माता और पिता बनी हुई है। हरेक मुहल्ले के ऐसे बच्चोंको समयसे, दूध और बिस्कुट पहुंचाये जाते हैं। उनके होनहार होने की अभिलाषा सप्रयत्न की जाती है।

स्कूलों और कालेजों में निःशुल्क लड़के और लड़कियों को शिक्षा दी जाती है। किताबें, स्लेटें और काग़ज बांटे जाते हैं।

कालेजों और स्कूलों में चरित्र-शिक्षा, व्यायाम शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षाका अच्छे से अच्छा प्रबन्ध किया गया है। जो कुछ हो चुका है, उसे और अधिक उपयोगी बनाने का निरन्तर उद्योग किया जाता है।

सातवाँ परिच्छेद

सोवियट का संगठन।

अब हम पाठकों को यह भी बतलाना चाहते हैं कि, सोवियट-शासन की रचना कैसी है। उसका संगठन पूर्णतः सार्वजनिक मत पर होता है। पर भिन्न२ रूपों में उसका संगठन क्या है, यह भी जानने योग्य बात है। इसी लिए, बनारसके प्रसिद्ध दैनिक "आज"में निकले हुए श्री० रामदयाल मैहरके एक युक्ति-युक्त लेखको हम उद्धृत करते हैं। लेखक ने सोवियट-संगठन पर अच्छा प्रकाश डाला है :—

"रूसी भाषामें सोवियटके मानी सभाके हैं। तीन वर्ष पहले संसारने सोवियटोंका नाम स्वप्नमें भी नहीं सुना था, परन्तु १९१७ ई०के मार्चके महीनेमें जब रूसी विप्लव हुआ तो जार और उसकी नौकरशाहीका अन्त सदाके लिए हो गया, जो कि अठारह करोड़ मनुष्यों और पृथ्वीतलके सातवें भागको उँगलीपर नचाती और फिराती थी। देखते ही देखते इतनी बड़ी सलतनतका स्वरूप कुछका कुछ हो गये। पुराने कानून और पुराने अफसर काफ़ूर हो गये। सभी स्थानोंपर सोवियट ही

सोवियट दिखाई देने लगे। यदि रूसमें शान्ति होती और युद्धकी भेरी न बजती होती, तो ज़ार और उसकी नौकरशाहीका किला इतनी जल्दी न तो टूटता और न मटियामेट हो जाता।

यदि रूसमें आर्थिक, भोजनाभावकी विषम समस्या न हुई होती, कृषि जीवनपर तुषार न पड़ा होता, रेलों और फैक्ट्रियों में सामान और मशीनों का कुप्रबन्धके कारण अकाल न हुआ होता, तो यह सम्भव था कि जारशाही पुनः जीवित हो उठती। परन्तु सोवियटों को ऊपरकी वस्तु विरासतमें मिल गई, इसपर बाहर और घरके शत्रुओं की जारशाहीसे मुठभेड़, कच्चे मालकी आयातपर चारों ओरसे नाकेबन्दी हो जाना, मन्त्रीमण्डलमें कपट जालोंकी गुत्थी और जारीनाकी उँगलियोंपर जारका चलना इत्यादिने सोवियटोंको नवीन सरकार स्थापित करनेका मौका दिया।

पहले तो लोग कहते थे कि सोवियट सरकारका ताजिया अब गिरा तब गिरा, परन्तु साम्यवादी बल्लियों पर स्थित सोवियट दिन दिन बढ़ती ही गई, इस बढ़तीको देखकर स्विट्ज़रलैण्ड और अरजण्टाइन भी उसी झण्डेके नीचे आखड़े हुए। रूसी कृषि वर्ग स्वभावतः धीमी चाल, शान्ति और परम्परागत प्रकृति (कञ्जरवेटिव) के होनेके कारण सोवियट सरकारके अधिक अनुरागी हो गये। क्यों ?

इसके दो कारण हैं. एक तो यही कि सोवियट सरकार शान्तप्रिय है और उसने शान्तिकी स्थापनाकी (यद्यपि प्राचीन

मित्र मण्डलीसे उसकी खटक गई, क्योंकि वह नये सुलहनामेको स्वीकार करनेको तैयार न थी) किसानोंको भूमि और श्रमजीवियोंको व्यवसायकी बागडोर दे दी, भूखों और पीड़ित जनोंको रूसभरमें भोजन दिया और ऊपर उठाया। व्यवसाय और कृषि विभागका पुनः संगठन किया। दूसरा मुख्य कारण यह भी था कि सोवियट राज्यप्रणाली प्राचीन रूसविधानकी संयोजक है।

रूसी-सोवियट प्रणालीका उदय।

"सन् १६०५ ई०का अकालकृत रूसी विप्लव श्रमजीवी प्रतिनिधियोंकी एक सभा द्वारा रचा गया था। उस सभाके सदस्य या तो मार डाले गये अथवा साइबेरिया भेज दिये गये। कुछ देश छोड़कर निर्वासित हो गये। परन्तु सोवियट तब भी जीवित रही और पृथ्वीके नीचे अपना काम जारी रक्खा और यही समितियां जो कि एक समय विफल थीं, सफल स्वरुपमें सन् १६१७में उदय हुई। उनका उदय होना, ज़ारका सिंहासन त्यागना और प्रान्तीय सरकारोंका बनना एक ही समयमें हुआ।

रूसी राजक्रान्तिका इतिहास हमें स्पष्ट रीतिसे सोवियटोंका संगठन रूसी समाजमें चारों ओर बताता है। इसकी मजबूतीका मुख्य कारण यह है कि किसानमण्डल इस संस्थासे दूधमें पानीके अनुसार मिले हुए हैं। पाठकोंको यह ज्ञात है कि रूसकी जनता अधिकतर भारतकी तरह कृषिपर निर्भर है, परन्तु रुसमें मार्केकी बात यह है कि किसान गाँओंमें भिन्न २ टोलियोंमें रहते हैं और गांवकी पञ्चायत (जिसे रूसी भाषामें मीर काउन्सिल कहते हैं) के अधीन रहते हैं। इन प्राचीन संस्थाओंके सदस्य प्रत्येक

घरके बूढ़े स्त्री और पुरुष होते हैं। इन सदस्योंको मुखियाके बनाये हुए कुछ खेतीके नियमोंको पालन करना पड़ता है। इस प्रकारसे सोवियट संगठनका यह मुख्य खण्ड हुआ।

अब इसके बाद श्रमजीवीदल भी इसीमें मिल गया, क्योंकि यह लोग ही व्यवसायके मुख्य अङ्ग हैं। यही श्रमजीवी सङ्गठित हो कर किसी कार्यको हाथमें लेते हैं, सब हिल मिलकर कार्य करते हैं और जो पैदा होता है उसे सब बाँट लेते हैं, इसीको सार्वजनिक धनका सहयोगी सूक्ष्म चित्र कहना चाहिये। जारने इस सहयोगी प्रवृत्ति (कोआपरेटिव मूवमेण्ट) को दबानेकी भरसक चेष्टाकी, परन्तु वह नाकामयाब रहा। विप्लवके बाद बोल्शेविक मण्डलीसे इसे बहुत सहायता मिली और इसने मालकी तैयारी और नफेकी बराबर बांटसे विस्तृत स्वरुप धारण किया। वह साम्यवादी मण्डल जो कि सोवियटोंको उत्साहित और संयमी बनानेके लिए था, इसको सफलीभूत बनानेके लिए प्राणपनसे चेष्टा करने लगा। जबतक कि हम अपनेको पूर्ण रूपसे उसी स्थितिमें न रख कर विचारें कि रूसी अवयव (अंश) से यह विचित्र, मजबूत सोवियट-सङ्गठन कैसे उत्पन्न हुआ तबतक न तो सोवियट ही समझमें आयेगा और न रूसी विप्लव। इसपर विशेषता यह है कि रुस और साम्यवादके दुश्मनोंको इसकी विचित्रतासे घृणा है, क्योंकि वे इसकी शक्तिसे डरते हैं। दूसरे देशवाले इसको अपने यहां प्रचलित करनेकी चेष्टा करते हैं। मि० जाजेफ किंगका कहना है कि यह रूसमें

स्वाभाविक ही उत्पन्न हुई है, वहीं पर परवरिश पाई और ऐसा ज्ञात होता है कि वहीं फलेगी।

संभव है, कि यह सोवियट सरकार रूपी पौधा दूसरे देशोंके जल, वायु और पृथ्वीमें न बढ़े इसमें इस विदेशी पौधेका कुसूर नहीं है, क्योंकि किसान और श्रमजीवी जो इसके मुख्य अंग हैं जबतक वे एक मतसे न मिलेंगे तबतक यह पङ्गुल ही बना रहेगा।

विप्लवके बाद सोवियटोंकी पहिली दशा।

पहले आठ महीनोंमें रूसी विप्लवके बाद जब सोवियटोंने क्रान्ति की तो उन्होंने प्राचीन राजनीतिक पुरुषको नेता बनाकर श्रमजीवी और सिपाहियोंके प्रतिनिधियोंकी सभा बना दी और प्रांतिक सरकारको कार्य्यं भार सौंप दिया। परन्तु पुराने बुड्ढोंसे न पटी क्योंकि वे सिपाहियों और श्रमजीवियोंके साथ सहानुभूति और समताका व्यवहार नहीं करते थे। दूसरे न तो शान्ति और जमीन दी और न अधिकार ही दिए। इसका नतीजा यह हुआ कि आठ मासमें ५ बार केबानेट बदलनी पड़ी और तब सोवियट सफलीभूत हुए। ६ अक्टूबर सन् १९१७में बोलशेविक मण्डलने जब शक्तिद्वारा सरकारको अपने हाथमें कर लिया तो उन्होंने रूसी विप्लववाले कामको सम्भाला। पतनके साथ साथ क्रान्तियाँ, नेताओंका वध, दूसरोंको जानकी गाहकता, कुचालें, रिशवतबाजी, विप्लवपर विप्लव, गैरोंकी दोस्ती, विदेशियोंका हमला, जासूसोंकी भरमार, मित्रोंसे कर्जखोरी इत्यादि सब कुछ हुआ परन्तु सोवियट सरकार अब भी मजबूतीसे कदम बढ़ाये

जा रही है। क्यों ? केवल एक मनुष्यके कारण, और इसीलिए इसकी विजय हुई। वह है लेनिन। जब कि विप्लव हुआ था उस समय महाशय लेनिन निर्वासनकी दशामें स्विटज़र लैण्डमें थे। लेनिन पेट्रोग्रेडमें सन् १६१७ के गरमियोंमें पहुँचे। वे गलियोंके कोनोंपर, चौराहोंपर, "सर्व शक्ति सोवियटोंकी है" पर व्याख्यान देते फिरते थे। परन्तु उस समय पहले लोग उनको गिरफ़ार करनेकी फ़िक्रमें घूम रहे थे क्योंकि उनका (लेनिनका) कहना था—

"रूसको मध्य श्रेणीके स्थानपर प्रजा-तन्त्रवादी बनना होगा और इसीलिए इसके ढांचेका नमूना फ्रांसीसी और अमेरिकन प्रजातन्त्रीके स्थानपर, सोवियट प्रजातन्त्र सार्वजनिक संपत्ति होगी जिसकी केंद्रीय शासनकी बागडोर देशभरके सोवियटोंकी केन्द्रीय-मण्डलके आधीन होगी। और लोकल* (स्थानिक सरकार) किसानों और श्रमजीवियोंके प्रतिनिधियों-द्वारा स्थानिक सोवियटका शासन रहेगा" लेनिनके उद्देश्य तथा उसकी पूर्ति कैसे हुई यही तो एक विचित्र बात है। परन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि एक आतङ्कित, निर्वासित मनुष्य, गरीब और अपरिचित, तीन वर्ष पहले जिसका संसारमें कहीं नाम न था रूसी कर्मक्षेत्रके रङ्गमञ्चपर आया, जहां युद्ध, कहत और संकीर्णताका पर्दा पड़ा था, देखते ही देखते छः मासमें वह सोवियट सरकारका मुखिया हो गया। प्रायः ढाई वर्षसे वह

* यहांपर ट्रेडेल और गिल्ड के नाम श्रमजीवी पुकारे जाते हैं। लेखक

अपने स्थानपर है। और दिनपर दिन वह बढ़े हुए रूसी सोवियटका मनोनीत नेता माना जाता है। आज भी हम देखते हैं कि हंगरी, जर्मनी, तथा अन्य बहुतसे प्रदेश सोवियट शासनको बनाकर उसकी सलाह ले रहे हैं। यह सब परिवर्तन और शासन क्या 'कम-मस्तिष्क-शक्ति' और 'अन्ध विश्वासी'का नतीजा है ?

सोवियट संगठन।

रूसके तिमिरको हटाकर सोवियट प्रणालीका उदय हुआ। और इस पद्धतिकी सरकारी ढङ्गपर स्वीकृति १० जुलाई सन् १९१८में पंचम-सार्व-रूसी-सोवियट कांग्रेसद्वारा एक लिखित मसविदे द्वारा हुई जब बोलशेविक मण्डलने नवम्बर सन् १९१७में शासनको अपने हाथमें कर लिया था।

इस मसविदाका अनुवाद लण्डन, डबलिन, और अमेरिकामें प्रकाशित हुआ। 'चूँकि रूस राष्ट्रीय सोवियट प्रजातन्त्रकी सम्पत्ति हो गई इसलिए इसका शासन' 'श्रमजीवी, किसान, और सिपाहियोंके प्रतिनिधियोंकी सोवियट कांग्रेस'के द्वारा होगा। यह कांग्रेस वर्ष भरमें कमसे कम दो बार बैठेगी। यह कांग्रेस एक सार्वरूसीय शासनमण्डल चुनती है जिसमें दो सौसे अधिक सदस्य नहीं होते और ये २०० आदमी अपनी ओरसे १८ मनुष्योंको चुनते हैं जो पीपुल्स कमीशरीज़ कहलाते हैं। ये सभापति चुनते हैं (आजकल लेनिन हैं) केन्द्रीय-विधायक कमेटी एक प्रकारकी पार्लियामेण्ट है। सबसे बड़ी

व्यवस्थापिका, प्रवन्धक और आधीनकर्त्ता रूसी साम्यवादी-संयुक्त सोवियट-प्रजातन्त्रका केन्द्रीय विधायक सभा है। सीढ़ी दर सीढ़ी कांग्रेसों और सोवियटोंका वन्धन एक वोटरसे लेकर शहरमें हो या गाँवमें सर्व प्रदेशों, प्रान्तों, शहरों, जिलों और वेलोस्ट (शासित स्थानों) से पूर्णरूपसे सम्बन्ध रखता है। प्रदेशीय, प्रान्तीय, और स्थानिक मण्डल, स्थानिक कार्यकारी और चुननेवाले कालेज होते हैं।

यह पश्चिमीय प्रजातन्त्र शासनप्रणालीके प्रतिनिधि ढङ्गका एकदम उलटा स्वरूप है क्योंकि रूसमें प्रतिनिधिप्रणाली (चुनाव) स्थानिक और राष्ट्रीय शासन शक्तिसे बिलकुल स्वतन्त्र है। कमीशरीज़ अपने बोर्ड द्वारा कानूनोंका मसविदा तैयार करता है परन्तु उसको केन्द्रीय विधायक सभा पास करती है। डिगरी और नियम इत्यादि सब कमीशरीज़ जारी करते हैं। रूसमें वर्ण और स्त्री पुरुषका कोई बन्धन नहीं है। प्रतिनिधि छः मासतक अपने पदपर रहते हैं, इस समयमें जब आवश्यकता समझी जाती है तो जिन्होंने कि चुना था उनकेद्वारा वापस बुला लिये जा सकते हैं और उनके या उनके स्थानपर दूसरा मनुष्य भेजा जा सकता है। विशेषतः सोवियटोंमें जो प्रतिनिधि हैं वह स्वतन्त्र नहीं हैं। प्रतिनिधियोंको आदेश मिलता है, जिसे चुनिन्दा बदल भी सकते हैं यदि प्रतिनिधि उनके मनके मुताबिक काम नहीं करते हैं।

शहरोंकी सोवियट।

अन्य देशोंमें म्युनिसिपेल्टी इत्यादिके चुनावके समय कमिश्नर प्रत्येक वार्डसे चुने जाते हैं। यह वात यहाँ नहीं है। यहाँ तो संगठित श्रमजीवी संस्थाओं, समितियों, और दूकानोंद्वारा सोवियट मनोनीत होते हैं। परन्तु स्थानिक (शहरोंके) प्रबन्धके लिये जैसे। पैट्राग्रेडमें यहांपर प्रति वार्डसे लोग चुने जाते हैं और यही लोगोंका सङ्गठन रायन सोवियट कहलाता है। चुनावसे तात्पर्य्य यह कभी नहीं है कि जिस स्थानसे चुनाव हुआ है उस भागके प्रतिनिधिकी कमी पूरी की जाय ; बल्कि संगठित समुदायकी भलाई होवे। ट्रेड यूनीयने, कोआपरेटिव सोसाइटियां, फैक्ट्रियोंके श्रमजीवी, शिक्षकमण्डल, ट्राममें काम करनेवाले, घरकी रक्षा समितिवाले इत्यादि सभी अपने अपने प्रतिनिधि शहरके सोवियट मण्डलमें भेजते हैं, और इसी मण्डलके प्रतिनिधियोंद्वारा कुछ लोग सार्वरूसी-सोवियटमें चुने जाते हैं। इस प्रकारसे एक मनुष्यके कई वोट हो सकते हैं, क्योंकि वह ट्रेडयूनीयनका एक सदस्य हो सकता है, कोआपरेटिव सोसाइटी-का भी सदस्य हो सकता है, या अन्य समितिका। इस प्रकार

रूसी लोगोंने प्रजातन्त्र "एक मनुष्य एक वोट" के मतको बिना किसी विशेष हानिके खण्डन कर दिया। चूँकि आजकल रूसमें कोआपरेटिव सोसाइटियोंकी संख्या कई सौ फीसदी बढ़ गई हैं। भोजन सम्बन्धी बातोंके अलावा, लकड़ी, तेल, कपड़ा और अन्य कच्चा सामानका खर्च सब इन कोआपरेटिव सोसाइटियोंद्वारा किया जाता है, इसलिये इन समितियोंकी सोवियटमें शक्ति और प्रतिनिधियोंकी संख्या अवश्य बढ़ जानी चाहिये क्योंकि प्रतिनिधियोंका चुनाव विशेष संस्थाओं और समितियोंसे होता है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि प्रत्येकको वोट देनेका अधिकार है।

गांवसे राजधानीतक ।

सोवियट सरकारकी जड़ गाँवकी पञ्चायतें हैं। क्योंकि यह हम कह चुके हैं कि रूसी जनता प्रायः किसान है और खेतिहर लोग पीढ़ी दरपीढ़ी खेतोंको जोतते चले आते हैं। इसीलिये उन खेतोंपर जमींदारका कोई हक न रहा। (यहाँपर यह भी कह देना आवश्यक है कि सरदारों * और कुलक † लोगोंका भी हक इन खेतोंपर न रहा) यह सब खेत वगैरह प्रत्येक खानदानको समान व्यवहारके नियमपर दे दिया जाता है। परन्तु इस बातका ध्यान रखा जाता है कि जितना एक खानदान जमीनको जोत सकता है तथा जितना उसके यहाँ खर्च है उसीके अनुसार उसको खेतोंकी बाँट होती है। इस प्रकारसे गाँवके सब खेत मीर (गाँवकी पञ्चायत) के अधीन हो गये। उस पञ्चायतको अधिकार होता है कि गाँवके निकटके खेतोंको (कुछको छोड़कर) लोगोंमें आवश्यकताके अनुसार सार्वजनिक

---

* सरदारी जमीन वह है जो लोगोंको राजाकी ओरसे मिलती थी और उसके एवज़में वे रूसी सरकारको लड़ाईके समय सिपाही देते थे।

† कुलक—वे लोग जो कि जमीनको रहननामे बयनामें या कर्जसे अपना लेते थे।

लाभके लिये बांट दे। मीरके लिये वोट देनेका अधिकार प्रत्येक खानदानको है। रूसी विधानके अनुसार अठारह वर्षके ऊपर प्रत्येक व्यक्ति वोट देनेका अधिकारी है। परन्तु उस व्यक्तिका जीवन निर्वाहके लिये कोई काम करना आवश्यक है। यह नहीं कि कोई अपनी आमदनीके लिये दूसरोंको मज़दूर रक्खें। यहाँपर यह भी समझ लेना चाहिए कि जो लोग कि कुछ शासन सम्बन्धी और खेतोंके बटवारेके प्रतिनिधियोंके लिये वोट नहीं दे सकते वे अपनी समितियों, क्लबों और यूनियनोंद्वारा दे सकते हैं।

मीरद्वारा चुने हुए प्रतिनिधि वोलस्ट (शासन मंडल) सोवियटमें जाते हैं। वहाँसे चुनकर वे प्रान्तीय या केन्द्रीय सभामें जाते हैं और फिर वे तथा फौज, समुद्री सेना, कोज़क और शहरोंसे लोग चुनकर सार्व रूसी कांग्रेसमें जाते हैं।

यहाँ किसानोंके सम्बन्धमें हम कुछ न कहकर केवल बोलशेविकोंका उनके प्रति कैसा व्यवहार है, यही कहेंगे। बोलशेविक लोग रूसी किसानोंको सहायता करनेकी आवश्यकताको जानते हैं। इसी लिये उनको वे बीज, खेती सम्बन्धी मशीनें, शिक्षा, और कृषी विद्या मुफ़्त देते है। और विशेष सुविधाओंका प्रबन्ध तब और अधिक होता है जब आठ दस या इससे अधिक किसान मिलकर सहयोगी खेती करते हैं।

बोलशेविकोंकी कार्यप्रणाली एक विशेष संगठित ढंगपर, विशेष तथा भिन्न भिन्न नियमोंपर किसानों और अपनी फौज तथा दुश्मनकी फौजके साथ वर्ती जाती है।

सोवियटोंमें भिन्न व्यवहार ।
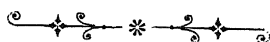
बोलशेविज्मको लोग एक केन्द्रीय नौकरशाहीके नामसे बदनाम करते हैं। हम यह मानते हैं कि बोलशेविज्मके अन्दर एक केन्द्रीय-शासन-मण्डल है परन्तु लड़ाई और नवीन शासनके शैशवकालमें एक पथदर्शी मंडल होनेकी सदासे आवश्यकता है। रूसी विधानने अपने ऐलानमें संयुक्त-मंडल स्पष्ट शब्दोंमें कहा हैं। उसने समस्त रूसके भिन्न भिन्न खंड, जिले, प्रान्त वनाए जहाँ मनुष्य श्रेणीकी भिन्नता तथा आर्थिक सुविधाओंके अनुसार नियमों और कानूनोंमें परिवर्तनकी आवश्यकता पड़ी और स्थानिक शासनमंडलोंको शासन तथा व्यवहारमें परिवर्त्तन करनेकी पूर्ण आजादी दे दी है। उन्हें किसी भी कानूनको घटाने बढ़ानेका अधिकार है। रूसी साम्यवादी-संयुक्त-सोवियट-प्रजातन्त्रकी मंशा यह कभी नहीं है कि एक भाई तो अपने रुपयेको पानीकी तरह बहावे और दूसरा भूखा मरे। वे चाहते हैंकि जब मनुष्य समान है तो सब सुविधाएँ भी समान होनी चाहिये।

लीग आफ़ नेशन्सका दिखावटी काम उन्हें फूटी आंखों भी नहीं सुहाता है। वे नहीं चाहते हैं कि सम्पत्तिशाली लोग अपने नफेके लिये लड़ाई, जुल्म, सख्ती और घृणाके भाव पैदा करें। लेनिनने अपने व्याख्यानोंमें स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि "सोवियटोंका शासन जैसा है, वह रहे या न रहे, परन्तु श्रमजीवियोंके कहे अनुसार संसारकी सभी कार्य्यप्रणाली चलनी चाहिये, यदि संसारमें शान्ति और अमन रखना है।" इसीलिये इस एलानको देखकर ही, एक बड़े भारी नीतिविशारद और लीग आफ़ नेशन्सके सदस्यने बोलशेविज्मको "सबसे बड़ी आदर्श शक्ति" ईसाकी पैदाइशके बादसे कहा है।

साधारणत: यह बात समझनेकी है कि रूसी सोवियटोंने अपने एलानमें कह दिया था कि जो लोग कि अपनी रोजी पैदा नहीं करते उन्हें वोट देनेका कोई अधिकार नहीं है। तथा वे लोग जो कि मजदूर लगा कर कमाते, या जो अपना जीवन दूसरेके पैदा किये धनपर व्यतीत करते, तथा महन्त, साधू कैदियों और पागलोंको भी वोट देनेका अधिकार नहीं है। तर्कके अनुसार हम यह कह सकते है कि वोट न देनेका इख्तियार सोवियटप्रणालीके बाहर है। सोवियट असलमें तो शासनकी एक विधिका नाम है। यह सम्भव है कि गर्म दलके साम्यवादी ढंगोंका व्यवहार पार्लमेण्टरी नियमोंके साथ फ्रांस और अमेरिकामें बरता जाय और यह भी लोग कह सकते हैं कि रूसी सोवियटमें नशिविक, वीरज़ीज़, या एक राष्ट्रवादी हो
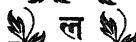
जायंगे। परन्तु हम यह कैसे मान लें जब कि हम देखते हैं कि बोल्शेविज्म और सोवियट रूपी वृक्ष रूसमें पैदा हुए, साथ साथ बढ़े और वे साथ साथ फूलते और फलते हैं। एक दूसरेके साथ साथ चल रहे हैं तो ऐसी दशामें एक दूसरेसे बिछुड़ जायं यह असम्भव है।

रूसके बाहर भी सोवियटकी परीक्षा।
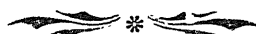
लड़ाईकी तकलीफ़ों और गड़बड़ीने दूसरे देशोंको वाध्य किया कि सोवियटको स्थापित किया जाय। खाद्य पदार्थोंकी कमी, सम्पत्ति विधान और अन्य कार्य्योंके कारण हड़तालें शुरू हुईं जिसमें मुख्य कारण आर्थिक और राजनीतिक भी थे। स्विटज़लैंडमें सन् १९१८के नवम्बर मासमें इसी इसी प्रकारकी देशव्यापी हड़तालें हुईं, किसान, जमींदार, फौज़ी सिपाही, और विद्यार्थी सभी शरीक थे। इसी प्रकारकी चेष्टा वीनोस एयरिसने भी की। फिनलैंड डक्रेन, वरलिन और वाल्टिकके प्रान्त इस सोवियटकी हवासे खाली न बचे। उन्होंने भी सोवियटको स्थापना की और अपने यहां शांतिको स्थापित किया। हङ्गरी और वैवेरियाने इसी प्रकारकी सोवियटप्रणाली स्थापित की परन्तु उसकी स्थिरतामें हमें शक है। रूसके वाहर दो ही स्थान ऐसे हैं, जहां कि शासक वंशोको भागजाना पड़ा और जहाँ कि फौजी हार और भूखने जनताको वेचैन और सरकारको कमजोर कर दिया। ये दोनों स्थान हङ्गरी और वैवेरिया हैं। वोलशेविज़्म और सोवि-

यटका आदर्श भाग जो कि संक्षेपमें नवीन सामाजिक प्रगतिके नामसे पुकारा जा सकता है जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि ऐसा जाल बिछाया जाना चाहिये जिससे कि पूंजीपतियोंके नफ़े को थातो श्रमजीवियोंको मिल जाय और उन्हींके सार्वजनिक चुनाव-द्वारा पूंजीपतियोंको सदाके लिये दबा लिया जाय ताकि वे जिसके भरोसे नफ़ा उठाते हैं, उन्हें सता न सकें। इसी उद्देश्यने सब देशोंमें बोल्शेविज्म् और सोवियटको जनताकी आंखोंमें सर्वप्रिय बना दिया है। और मिस्टर जोज़ेफ किंगके शब्दोंमें हम कह सकते हैं, कि-यदि श्रमजीवियोंको भोजन और आराम, सुख और स्वतन्त्रता न दी जायगी, तो बहुत सम्भव है कि वह सारे संसारमें फैलनेमें कसर न करेगी। इसी लिये पूंजपतियों और सरकारको शीघ्रतासे उचित शान्ति बनाए रखनेके लिये उनकी मांगोंको पूरी करनी चाहिये।

जर्मनीमें जो सोवियटकी स्थापनाका प्रस्ताव हुआ कि यह भी पार्लमेण्टकी तरह समानताका दावा रखे और शासक मण्डलको पूर्ण सलाह देनेवाली हो। परन्तु यह न भूल जाना चाहिए कि जबतक देशकी जनतामें लिखने बोलनेकी स्वतन्त्रता नौकरशाहीके शिकंजेकी ढील, तथा समानताका व्यवहार न होगा तबतक देशमें शान्ति न होगी।

मि० विलसनकी १४ तर्कें केवल नाम मात्रको थीं। देशके फूलके समान वे कहला देनेकी बातें थीं। उनकी बातोंको सभी सुनकर प्रफुल्लित हो जाते थे, यदि वे बातें कामकी होतीं तो
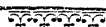
आज दिन बोल्शेविज्म् और सोवियटको बुरा कोई न कहता और सोवियटको ज्यादती और जबर्दस्तीसे दबानेकी चेष्टा न की जाती। प्रत्येक देश इसको ज़रूर एक बार आजमाइशकी सिल्ली-पर चढ़ाता और इसके फलको चाहे बुरा होता या भला, चखनेको तैयार हो जाता। यदि पश्चिमीय सभ्यताकी प्रजातन्त्रमण्डल लड़ाके राष्ट्रोंमें शान्ति स्थापित नहीं कर सकती और पुरानी लचर सरकाररूपी दीवारको मिटाकर नवीन निर्मित नहीं कर सकती तो यह बहुत मुमकिन है कि पश्चिमीय जन दूसरे मार्गों-का अवलम्बन करेंगे। हो सकता है कि वे बोल्शेविज्म् और सोवियटकी रूसकी तरह परीक्षा करें। तथापि हम तो यही कहेंगे कि जब अन्याय बढ़ जाता है उस समय लोग जानपर खेलकर संखिया भी औषधिके रूपमें देनेको उद्यत हो जाते हैं, बनिस्बत उसके कि उसे पड़े पड़े आंखोंके सामने मरने दे।

"दर्दका हदसे गुज़रना है दवा हो जाना" वाली कहावत रूसके सम्बन्धमें ठीक उतर चुकी है। ज़ारशाहीकी पैशाचिक लीलाएँ मानव समाजके हृदयोंको विदीर्ण करनेके लिए काफ़ी हैं। जो जो जाति सुधारना और परिवर्तनशील युगमें जाना चाहती है उसे अधिक कुचले जानेके लिए तैयार रहना चाहिये।

लेनिनका दाहिना हाथ।

सन् १८६७की बात है कि, रूसमें जारशाहीका राज्य तप रहा था। जारके अमानुषिक अत्याचारके कारण सवत्र त्राहि त्राहि मच रही थी। भिन्न भिन्न स्थानोंपर अराजकता और षड्यन्त्रों-की धूम मची हुई थी। एक तरफ बड़े बड़े सरकारी अफसरोंकी हत्याएं की जारही थीं, और दूसरी ओर जार अपने क्रूर मन्त्रियोंकी मन्त्रणासे देशके नौनिहाल युवकोंको फांसी, आजन्म कैद, और देश निकालेका दंड दे रहा था। हजारों युवक और युवतियां, जो गुप्त षड्यन्त्र-समितियोंके सदस्य और सदस्याएं थीं, अपने देशकी स्वाधीनताके लिये हथेलीपर प्राण लिये फिरती थीं। गांव गांवमें इनके रात्रिमें व्याख्यान होते थे। राजद्रोही पुस्तकोंका प्रचार होता था। घमासान युद्ध छिड़ा हुआ था। पेट्रोग्राड, मास्को, कीव आदिकी जेलोंमें बड़े बड़े देशभक्त विना अन्न-जल दिये भूखों मार डाले गये। जारकी खूनी आँखें जिधर घूम जाती थीं, उधर ही खलबली मच जाती थी।

लेनिनके मंत्री मि० ट्राटस्की।

सुख दुखसम सबके लिए हो इस नये समाजमें।
सबका हाथ समान हो लगा तख्तमें ताजमें॥

ऐसी स्थितिमें जो लोग देशकी सेवामें जुटे हुए थे, उनमें एक मोशिये लिअन ट्राटस्की थे। इनकी प्रतिभा सारे रूसमें फैली हुई थी। ये प्रसिद्ध साम्यवादी, वक्ता और लेखक थे। क्रान्ति-कारियोंमें इनका बड़ा सम्मान था। आन्दोलन कार्य (Propaganda-Work) में इनकी निपुणता सर्वमान्य थी। कुछ ही दिनोंमें, ये मजदूरों और सैनिकोंके नेता कहलाने लगे।

१९०५में, जब ये गैर-सरकारी प्रतिनिधि सभा (सोवियट राष्ट्रीय पञ्चायत) के सभापति थे तब, इनपर एक राजद्रोही मुकद्दमा चलाया गया, और जारकी आज्ञासे इन्हें उत्तरी साइ-बेरियामें आजन्म देश निर्वासन दिया गया !

यहांपर, एक बात और जानने योग्य है। यूरोपीय युद्धके समयमें पाठकोंको मालूम हुआ होगा कि, कैसरके पास कुछ ख़ास गुप्तचर रहा करते थे। ये गुप्तचर बड़े चतुर होते थे। ऐसे आदमी केवल जर्मनोंमें ही नहीं रहते थे, यूरोपकी सभी सरकारोंके पास ऐसे गुप्तचर रहते थे, और अबतक रहते हैं। असलमें इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय खुफिया पुलिसके नामसे पुकारना चाहिये। ये लोग शत्रु-राष्ट्रोंके भेदोंका पता लगाया करते हैं, और अपनी सरकारोंको गुप्त बातोंका पता बतलाया करते हैं। ट्राटस्की भी इस काममें सुदक्ष थे। यह ज़ारशाहीके भेदोंको भेष बदलकर, बड़े बड़े अफसरोंको धोखा देकर, जान लिया करते थे। जेलसे निकल भागना इनके बायें हाथका खेल था !

इसी लिये ट्राटस्कीने कैदमें पड़े-पड़े सड़ना पसन्द नहीं

किया। कड़े पहरेके होते हुए भी, ट्राटस्की एक रातको वहांसे भाग खड़े हुए। ये फिर मास्कोमें आ पहुंचे, और गुप्तरूपसे भेष बदलकर अराजकोंके साथ काम करने लगे। पर, शीघ्र, ही, इनके एक मित्रने सूचना दी, कि अब रूस छोड़ दो अन्यथा विपत्ति आजायगी। पत्र पाते ही, १५ मिनटके भीतर ये आष्ट्रियाके लिये चल पड़े। यदि थोड़ी ही देर ये और रुके रहते तो, गिरफ्तार कर लिये गये होते। क्योंकि १ घंटेके भीतर ही, इनकी गिरफ्तारीके लिये ज़ारकी पुलिसने इनके गुप्त निवास-स्थान पर छापा मारा!

आष्ट्रिया पहुंचकर इन्होंने एक समाचार पत्रके दफ़रमें नौकरी कर ली। युद्ध छिड़ते ही, उसी मित्रने फिर इन्हें तार दिया, कि आष्ट्रिया छोड़ दो! ट्राटस्की आष्ट्रियासे स्वीजरलैंडको भाग गये। वहां इनकी मो० लेनिनसे मुलाकात हुई। ये दोनों पुराने मित्र थे। इधर लेनिनकी पुस्तकोंने रूसियोंके हृदयोंको अपनी ओर बेतरह खींच लिया था। ट्राटस्की भी लेनिनको अपना गुरु मानने लग गये। जब अमेरिका भी युद्धमें शामिल होनेको तैयार हुआ, और आजकलके भारतीय वायसराय लार्ड रीडिङ्ग अमेरिकामें जादूकी लकड़ी फेरनेके लिये पहुंचे, तो ट्राटस्की भी इङ्गलैंडकी कूटनीति जाननेके लिये अमेरिकामें जा पहुंचे। अमेरिकाके रूसी पत्र "नोवीमीर" के आफिसमें ट्राटस्कीने दो वर्षतक काम किया।

पर रूसमें क्रान्तिकी सफलता देखकर ये कैनाड़ा पहुंचे

यहांसे ये रूसके लिये चलनेको हो थे कि, कैनेडियन सरकारने इन्हें जर्मन गुप्तचर समझकर गिरफ़ार कर लिया। पर, ये भी एक चतुर थे, इन्होंने अपने मिल्यूकाफको जो उस समय रूसी प्रजातन्त्रके पर राष्ट्रमन्त्री थे, तार दिया और मिल्यूकाफका तार पाकर केनेडियन सरकारने इन्हें छोड़ दिया।

रूसमें पहुँचकर, इन्होंने फिर अपनी जड़ें जमाईं। उधर, जर्मनीकी कृपासे लेनिन भी पेट्रोग्राडमें जा पहुँचे। इन दोनों-का एकत्र होना बड़ा शक्तिसम्पूर्ण हो गया। कुछ ही दिनोंमें इन्होंने, रूसी प्रजातन्त्रके प्रसिद्ध मंत्री मो० करेनूस्कीका तख्ता उलट दिया, और वोल्शेविक शासनकी स्थापना करदी !

इसके आगे वोल्शेविक रूसपर क्या क्या विपत्तियां आयीं ये सब बातें समाचार पत्र पढ़नेवाले पाठक अच्छी तरह जानते हैं। मित्र राष्ट्रोंने वोल्शेविज्मको जड़से उखाड़ फेंकनेके लिये तरह-तरहके उद्योग किये। छोटी-छोटी रूसी रियासतोंको वोल्शेविकोंके विरुद्ध उभाड़ा, लड़ाया और मदद की। पर ट्राटस्कीने, जो लेनिनका दाहिना हाथ है, सब विपत्तियोंका सामना किया। मित्रराष्ट्रोंकी सेनाओं तकमें वोल्शेविज्मका ग़दर फैला दिया। आस्ट्रिया और जर्मनीमें राज्यक्रान्तियां घटित करायीं। और बाल्कन राज्योंमें भी अपना जादू फैला दिया। पिछले तीन वर्षोंमें ट्राटस्कीने वोल्शेविक सिद्धान्तका जो संसारव्यापी प्रचार किया है, उससे स्पष्टतः पता चलता है, कि वह कितना जबर्दस्त कूटनीतिज्ञ है।

आजकल, लेनिन और ट्राटस्की ब्रिटिश साम्राज्यके विनाश-की स्कीम हाथमें उठाये हुए हैं। इसीलिये, उन्होंने टर्की, फारस और अफ़गानिस्तानसे संधियां कर ली हैं। मेसोपोटामियां सीरिया, अरमीनिया और पैलस्टाइनमें बोलशेविक आन्दोलन सजग हो उठा है। इधर, फारससे भी बृटिश सेनाएं इसी कूट-नीति द्वारा निकाली गयी हैं।

तीन भयङ्कर सन्धियाँ।

—:※:—

म बता चुके हैं कि मोशिये ट्राटस्की कितना चलता पुर्जा और भयङ्कर आदमी है। यह उसके ही बाहुबल और मो० लेनिनके मस्तिष्ककी करामात है कि, आज 'बोल्शेविज़्म' फूलता नज़र आ रहा है।

अब हम पाठकोंकी सेवामें कुछ बातें, उन तीन संधियोंके बारेमें रखेंगे, जो बोल्शेविक सरकार और टर्की, फारस तथा अफगानिस्तानके बीचमें हुई हैं। ये संधियां बड़ी ही मनोरञ्जक तथा रहस्यमयी हैं। इनका जिक्र करनेके पहले यह बात भी जान लेने योग्य है, कि इन संधियोंके पहले अन्तर्राष्ट्रीय संसारमें इन तीन मुसलमानी राज्योंकी क्या स्थिति थी। जिस समय मित्र-राष्ट्र टर्कीके साथ संधिकी शर्तें तय कर रहे थे, उस समय मुसलमानोंने यह आन्दोलन उठाया था, कि यूरोपके ईसाई राष्ट्र संसारके पर्देसे और विशेषकर यूरोपकी भूमिपरसे मुसलमानी सत्ताका नाश कर देना चाहते हैं। खास टर्कीमें भी, यह आन्दोलन बड़े जोरोंपर उठ खड़ा हुआ था। राष्ट्रीय दलके तुर्कोंने ऐसी संधिका विरोध किया था, और टर्कीके सुल्तान-

को चेतावनी दी थी कि ऐसी संधि करके वे टर्कोंका सर्वनाश न करें। पर, सुल्तान लाचार थे, वे कर ही क्या सकते थे। अन्तमें, थ्रेस, स्मरना, पैलस्टाइन, सीरिया, मेसोपोटामियां उनके हाथोंसे छिन ही गये। पर, एक तरफ टर्कोंको यह क्षति उठानी पड़ी, तो दूसरी तरफ केवल पाशाकी अध्यक्षतामें राष्ट्रीय दलके तुर्कोंकी ताकत भी बहुत कुछ बढ़ गयी। उन्होंने थ्रेस और स्मरनाके उत्तरी तथा पश्चिमी भागपर कब्जा कर लिया। उधर, अर्मेनियांमें भी बोलशेविकोंकी सहायतासे, राष्ट्रीयताका झण्डा खड़ा हो गया। सुल्तानने तो, बोलशेविकोंसे संधि नहीं की, परन्तु, राष्ट्रीय दलके तुर्कोंने बोलशेविकोंके साथ एक संधि निश्चित कर ली। इस संधिके द्वारा बोलशेविकोंने टर्कोंमें बोलशेविक ढङ्गका प्रजातन्त्र स्थापित करना चाहा। यद्यपि उक्त संधिके परिणाममें अभीतक सम्पूर्ण टर्कीमें साम्यवादी शासनकी स्थापना नहीं हो पायी है, तथापि मित्र राष्ट्रोंका रहा-सहा प्रभाव टर्कीसे उठ गया है।

इधर, फारसमें, बृटिश सरकार पैर फैला रही थी। फारसके शाह जब इङ्गलैण्ड पहुंचे थे, तब, उनका बड़ा आदर-सत्कार किया गया था। और, उनको रास्तेपर ले आनेका भार, लार्ड कर्जनके कन्धोंपर रखा गया था। लार्ड कर्जनने लम्बी चौड़ी दावतें दीं, और फारसके कम-अक्ल शाहको खूब मलाईकी बरफ खिला कर पिघलाना चाहा। यद्यपि, बृटिश सरकारके बड़े बड़े गुप्तचर शाहके चारों तरफ रखे गये थे, पर, तब भी कहा

जाता है कि, बृटिश नीतिके अर्थ समझाते रहनेके लिये, शाह अपने साथमें, एक फारसी भेषधारी बोलशेविक कूटनीतिज्ञको रखे हुए थे। उसने शाहको बृटिश नीतिकी अच्छी पोल सुझाई! फल यह हुआ कि, लार्ड कर्जनके मोहरे मात खा गये, और शाहने फारसमें वापस आकर सब दावतोंपर पानी फेर दिया! अङ्गरेज़ोंके शर्तनामेको उठाकर ताक़पर रख दिया, और न मालूम क्या चाल चली गयी कि, अङ्गरेज़ोंसे सहानुभूति रखनेवाला मन्त्रि-मंडल भी टूट गया। जो नया मन्त्रि-मंडल रचा गया, उसके सभी मंन्त्री अङ्गरेज़ोंसे फिरण्ट थे। फलतः, फारसने बोलशेविकोंसे संधि कर ली! इस संधिके अनुसार, बोलशेविकोंने ज़ारके समयसे चली आनेवाली संधिको तोड़ कर, फारससे अपने स्वार्थोंका प्रभाव उठा लिया, और फारसको पूर्ण स्वाधीन कर दिया। बड़ी दिल्लगी रही। कमज़ोर राष्ट्रोंसे संधियां इस लिये की जाती थीं, कि, जिससे उनके कमज़ोर देशोंके व्यापारपर शक्तिमान राष्ट्रोंका कब्जा रहे। पर, बोल-शेविकोंने अपना पुराना कब्ज़ा भी उठा लिया। बोलशेविकोंका लक्ष्य केवल इतना था कि, फारसपरसे बृटिश प्रभाव उठ जाय, और मौका पड़नेपर बृटिश "उपनिवेश" मेसोपोटामिया, पैलस्टाइन आदिपर आक्रमण किया जा सके। इस संधिको सुनकर लार्ड कर्जनके चेहरेपर हवाइयां उड़ने लगीं। क्योंकि, उनकी संधि, फारसपर सैनिक शासनके साथ-साथ मालगुज़ारीके विभागपर भी कब्ज़ा जमाना चाहती थी। सब आशाएं धूलमें

मिल गयीं, और समस्त बृटिश फौज फारससे वापस बुला लेनी पड़ी !

इधर, अफगानिस्तानके नये अमीर अमीनुल्ला निराले ही फैशनके आदमी थे। इनकी इच्छाएं नेपोलियन और कैसरसे टक्कर लेनेवाली थीं ! इन्होंने सोचा कि, ये युरोपके ईसाई राज्य मुसलमानोंका नाश कर देना चाहते हैं, इसलिये, किसीतरह इनकी चालोंकी मात किया जाय। झट इन्होंने एक डेपुटेशन लेनिनकी खिदमतमें भेजा, और गुप्त रूपसे फारसके शाह और टर्कीके सुल्तानसे मन्त्रणा की। तीनोंकी राय एक हो गयी, ओर निश्चित हुआ कि, तीनों राज्य एक होकर यूरोपीय कूट-नीतिका सामना करें। अफ़गानिस्तानने झट बोलशेविकोंकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। बोलशेविक सरकार हिन्दुस्तानमें राज्यक्रान्ति फैला बोलशेविज्मका प्रचार करना चाहती थी, उसने इस मौकेको हाथसे न जाने दिया। उसने अमीरको खूद प्रोत्साहन दिया। अब तो, अमीर साहब लम्बे चौड़े सबज़ बाग़ देखने लगे ! वे सोचने लगे, कि अफ़गानिस्तानके दक्षिण अर्थात् हिन्दुस्तानके पश्चिममें, एक अफ़गानी बन्दरगाह भी बन जाय। इस बन्दरगाह द्वारा अफ़गानिस्तान जहाज़ी व्यापार तथा नौसैनिक-रक्षाका भी प्रबन्ध सोच रहा है। तीनों मुसलमानी राज्योंकी उपर्युक्त स्थिति है। अमीरने बोलशेविकोंकी यह शर्त मञ्जूर कर ली है कि, अफ़गानी सीमापर, बोलशेविक राजदूत अड्डे बनाकर रह सकोगे।

इन्हीं अड्डोंकी स्थापनाके लिये मोशिये ट्राटस्की अफ़गानी सीमाके निरीक्षणके लिये आ रहे हैं। चलते समय उन्होंने मास्कोके एक सैनिक कालेज़में स्पीच दी है, जिसमें उन्होंने यह बात भी कही है कि, इस समय १० लाख बोल्शेविक सैनिक युद्धके लिये बिलकुल तैयार हैं! पता नहीं, उन्होंने किस युद्धका उल्लेख किया है। लेकिन उनकी चालोंसे इतना पता अवश्य चलता है कि, वे एशियामें प्रवेश करना चाहते हैं। चीनपर भी उनकी दृष्टि है, और बहुत सम्भव है कि, चीनके नये राष्ट्रपति डा० सनयात सेनसे उनकी बातचीत हो रही हो।

इन सब बातोंके ऊपर हिन्दुस्तानकी बात है। और, यह अच्छा होगा कि, इस स्थानपर, हम कुछ बातें पाठकोंकी जानकारीके लिये लिख दें। मुसलमानी राज्योंकी मैत्रीसे; बोलल्शेविक सरकार एशियामें वृटेनकी शक्तियोंको घटा देना चाहती है। अभीतक वह इस काममें बहुत कुछ सफल भी हुई है। अफ़गानिस्तानमें जो वृटिश भारतीय डेपूटेशन संधि करने गया है, वह क्या कर रहा है, यह किसीको नहीं मालूम। संधि होगी या उसे वापस आना पड़ेगा, यह ईश्वर जाने। पर, मि० लायड जार्जकी बातोंसे पता चलता है कि, वृटिश सरकार अफ़गानिस्तानसे जल्दीसे जल्दी जैसी—तैसी संधिकर लेना चाहती है।

अन्तमें, हम एक बात और कहेंगे। पाठक यह न समझ लें कि, बोल्शेविकोंकी संधिसे मुसलमान राष्ट्र कोई लाभ

उठा सकेंगे। जैसा कि, अक्सर कहा जाता है कि, हिन्दुस्तानी गड़बड़ीसे अफ़गानिस्तान लाभ उठायेगा। अफगानिस्तान, भारतीय स्थितिसे कोई लाभ नहीं उठा सकता। एक तो भारतीय राज्यक्रान्ति बहुत दूरकी चीज़ है। दूसरे, यदि वह किसी रूपमें संघटित भी हुई तो, उससे मुसलमानी राज्य फायदा न उठा सकेंगे। बोल्शेविक सरकार तीनों मुसलमानी राज्योंको ऐसा चकमा देगी, कि, वे भी याद करते रह जायेंगे। भला वह इन तीनों राज्योंमें राज-सत्ता क्योंकर देख सकती है। बोल्शेविक सरकार राजसत्ता की परम शत्रु है। वह अपना काम निकालकर तीनों मुसलिम राज्योंमें प्रजातन्त्रकी स्थापनाका षड़यन्त्र चलायेगी। मैत्रीके कारण उसके आन्दोलनमें दिक़तें भी कम पड़ेंगी, और फिर, बोल्शेविक जादू, मुसलमान जैसी भोलीभाली जातिपर तो, बड़ी जल्दी असर करेगा।

लेनिनका भयानक षड्यन्त्र !

निन किसीसे स्नेह नहीं रखता। जिस समय वह अन्तर्राष्ट्रीय बोल्शेविक भ्रान्ति की कल्पना करता है उसका चेहरा बड़ा वीभत्स हो उठता है। उसका हृदय नीरस और शुष्क पत्थर की भाँति हो जाता है। अपनी सफलताके लिए वह किसी भी बड़े से बड़े बलिदानको करनेके लिये तैयार हो जाता है। ऐसे अवसरपर यह राक्षसका रूप धारण कर लेता है।

लेनिन सचमुच बड़ा निर्दयी मनुष्य है। अपने कामको पूरा करनेके लिए वह पागलसा बना हुआ है। जो लोग उससे मिलने गये हैं, और मिले हैं, वे बतलाते हैं कि, उसके मस्तिष्क में बड़ी भारी आकुलता राज्य कर रही है। वह हर वक्त बेचैनसा रहता है। उसके दिमागमें न जाने कौन कौन भावनायें उमड़ा करती हैं कि, उसके मस्तिष्कको एक क्षणके लिये भी विश्राम नहीं मिलता। यदि लेनिन दैत्योंकी तरह हृष्ट-पुष्ट और देवताओंकी तरह स्वस्थ न होता, तो कभी का पागल हो गया होता। निश्चय ही लेनिन, मि० लायड-जार्ज का

परम शत्रु है। वह इतना बड़ा रशको है कि, प्रसिद्ध साम्राज्य-वादी, परम चतुर राजनीतिज्ञ मि० लायड जार्ज की उन्नति नहीं देख सकता। ब्रिटिश साम्राज्यका वह इतना बड़ा शत्रु है कि, यदि, उसकी चाल चल सके, तो वह एक मिनटमें इस सुदृढ़ साम्राज्यको मींजकर फेंक दे। वह जानता है कि, पहिले सबसे बड़े साम्राज्यका नाश करना चाहिए। इसी लिये वह ब्रिटिश-साम्राज्यका विस्तार नहीं देख सकता। इसीलिये उसने टर्कीके बृटिश-अधीन प्रान्तोंमें बोल्शेविज़मका प्रचार आरम्भ कर दिया है। टर्कीके राष्ट्रीयदलको अपने चंगुलमें फाँस लिया। उसीने फ़ारसपर जादू फेरा है, और ब्रिटिश सेनाओंको हटवाया है। उसीने अफ़गानिस्तानको अपने हाथकी कठपुतली बनाया है। वह अफ़गानिस्तानके मार्गसे हिन्दुस्तानमें भी कोई न कोई उत्पात खड़ा करनेका मन्सूबा बाँध रहा है। अभी हालमें, टर्कीमें जो अफ़गानी डेपूटेशन पहुँचा है, उसके प्रधानने ऐसी ही भेद-भरी एक बात कही है! प्रधानने कहा है कि, हिन्दुस्तानमें सफल राज्यक्रान्तिकी तैयारी पूरी करनेका प्रबन्ध किया जा रहा है! कैसी भयानक कल्पना है। सीमान्तके निकट बोल्शेविक षड़यन्त्रकारी अपने रहनेके अड्डे बनाते सुन पड़े हैं। बोल्शेविक सरकारने अफ़गानिस्तानके साथ जो संधि की है, उसमें भी भारतीय मार्ग के सम्बन्धमें कुछ इशारा है। कितना वीभत्स षड़यन्त्र है!

लेनिन इधर ब्रिटिश साम्राज्यको नष्ट कर देनेकी कार्रवाई

कर रहा है; उधर जर्मनी, आष्ट्रिया, इटली, फ्रान्स, स्पेन आदिमें भी अपना गहर विस्तार फैला रहा है। उक्त देशोंके मज़दूर-दलोंकी साम्राज्य लिप्सायें बदल रही है। हालमें, इंगलैण्डमें, जो भयानक मज़दूर-क्रान्तिकी संभावना नज़र आरही थी, उसमें भी लेनिनका प्रभाव काम कर रहा था। लेनिन बड़े बड़े साम्राज्योंको धरा शायी कराकर अपने झण्डेको संसार भरके ऊपर फहरानेकी विकट स्कीम काममें ला रहा है। सचमुच, उसने अभीतक बहुत कुछ कर डाला है। उसने जो कुछ किया है, बड़े भयानकरूपमें किया है। उसे जो कुछ कहा जाय, थोड़ा है। वह ख़ूनी है, हत्याकारी है, षड्यन्त्र कारी है, रक्त-पिपासु है! वह क्या नहीं है? वह सारी पृथ्वीको ख़ूनसे रङ्ग देना चाहता है। उसका कहना है कि, जिस देशकी भूमि ताज़े ख़ूनसे तर बतर न होगी, वहाँ बोल्शेविज्मका अङ्कुर उगही नहीं सकता!

चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और अमेरिकातकपर उसकी ख़ूनी आँखें पड़ रही हैं। वह संसारभरकी शान्ति मिटाकर अपनी स्कीम काममें लाना चाहता है। वह साम्राज्य नहीं बनाना चाहता, वह किसीकी श्री, किसीका धन, किसीका घर-बार और किसीकी राष्ट्रीय मर्यादा नहीं छीनना चाहता। वह केवल बोल्शेविक भ्रान्तिको विश्व-विजयिनी बनाना चाहता है! वह सब जगह बोल्शेविक शासन देखना चाहता है! उसका साहस अलेकज़ेण्डरसे अधिक ज़बर्दस्त, उसकी अभिलाष

नेपोलियनसे अधिक बलवती, उसकी भयानकता कैसरसे अधिक क्रूर, और उसकी दृढ़ता लायड जार्जसे अधिक अटल दिखलाई पड़ती हैं। सचमुच वह एक भयानक मनुष्य है।

तीनों मुसलिम राज्योंको अपने चंगुलमें फँसाकर वह न जाने क्या षड़यन्त्र रचने जा रहा है। उसकी स्कीम प्रकट है, पर उसकी चालें किसीपर प्रकट नहीं। टर्की द्वारा वह यूरोपकी शान्ति नष्ट करना चाहता है। फारस द्वारा वह मित्रोंकी नवीन राज्य-रचनाका विनाश सोच रहा है। अफ़गानिस्तान द्वारा वह ग़रीब हिन्दुस्तानको ख़ूनसे रँगने और त्राहि-त्राहि मचादेनेकी भयङ्कर कल्पना कर रहा है! उसकी इस आशावादिताका ध्यान करने जाकर माथा चक्कर खाने लगता है!

लेकिन क्या वह इन मुसलिम राज्योंका मित्र बना रहेगा? क्या वह टर्कीमें सुल्तान, फारसमें शाह और अफ़गानिस्तानमें अमीरको बना रहने देगा। सचमुच, वे बड़े बेवकूफ हैं, जो सोचते हैं कि, लेनिन इन तीनों राज्योंमें राजतन्त्र बना रहने देगा। वह मिटा देगा; अगर उसकी चली तो, वह इन तीनों राज्योंकी शाही गद्दियोंको धूलमें मिला देगा! लेनिन भला राजतन्त्र देख सकता है? उसकी आँखोंमें जलता हुआ खून चिनगरियाँ बनकर चमकने लगता है, जब वह किसी राजसत्तावादी देशकी तरफ दृष्टिमात्र फेरता है। वह संसारके सर्वनाशपर उतारू है। यूरोपभर उसके क्रोधसे काँप रहा है। जर्मनी प्राण बचाता फिरता है। आस्ट्रिया और हंगरी हैरान हैं!

रूमानिया, बल्गेरिया, सर्विया सभी परेशान हैं। बड़े बड़े यूरोपीय राज्य हथेलीपर प्राण लिये हुए उसके षड़यन्त्रोंके साथ द्वन्द्वयुद्ध लड़ रहे हैं।

लेनिनकी भयङ्कर आँखें संसारभरपर शासनकर रही हैं। वह जिधर देखता है, उधरका समुद्र भयसे खौल उठता है। जो, वर्त्तमान अन्तरराष्ट्रीय स्थिति समझते हैं वे भलीभाँति जानते हैं कि, इस समय कितना बड़ा संसार-सङ्कट उपस्थित है। सबके हृदय भयभीत हैं। सभी अपनी अपनी सत्ताके लिए ख़तरा देख रहे हैं।

और ऐसे तो जो हरिकी इच्छा। ईश्वर बुराईमेंसे भी अच्छाई निकाल देता है। क्या आश्चर्य, इस संसार-सङ्कटके बीचमेंसे ही किसी अत्यन्त शान्तिमयी, सुखमयी, और आनन्द-मयी स्थितिका जन्म हो सकता है!